सप्रू हाउस शोध-पत्र

चुप्पी तोड़ना: आर्कटिक में रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका

डॉ. स्तुति बनर्जी और डॉ. इंद्राणी तालुकदार

सारांश

आर्कटिक तेजी से और गहन तरीकों से बदल रहा है। यह क्षेत्र पृथ्वी पर कहीं और की तुलना में दो बार तेजी से गर्म हो रहा है, आर्कटिक स्थायी रूप से बर्फ से ढके होने से मौसमी बर्फ-मुक्त होने से संक्रमण कर रहा है। आर्कटिक के बढ़ते भू-रणनीतिक और भू-राजनीतिक महत्व ने राष्ट्रों को भविष्य के विकास के लिए एक संपत्ति के रूप में इस क्षेत्र को देखने के लिए प्रेरित किया है। जबकि जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को संबोधित करने और आर्कटिक पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए एक कॉल है, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) भविष्य के बर्फ या कम बर्फ आर्कटिक के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। जैसा कि प्राकृतिक वातावरण परिवर्तन के माध्यम से है, इस क्षेत्र की सुरक्षा और आर्थिक वास्तुकला में एक समान परिवर्तन लाने की आशा है। यह क्षेत्र पहले से ही आर्कटिक सर्कल के सदस्यों, विशेष रूप से रूस और अमेरिका द्वारा सैन्यीकरण के साथ-साथ रक्षा उन्नयन में वृद्धि देख रहा है। जबकि रूस ने आर्कटिक महाद्वीपीय शेल्फ के कुछ हिस्सों पर दावा करके अपनी बढ़ती रुचि को प्रदर्शित करने की कोशिश की है, दूसरी ओर, आर्कटिक में अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए अपने तटरक्षक और नौसेना को मजबूत करने की आवश्यकता पर अमेरिका के भीतर एक बढ़ती हुई प्राप्ति है। जैसा कि दोनों देश अंतरराष्ट्रीय भू-रणनीतिक मुद्दों के विपरीत पक्षों पर खड़े हैं, अमेरिका और रूस के बीच की खाई, आर्कटिक क्षेत्र में भविष्य के टकराव का कारण बन सकती है। अध्ययन का उद्देश्य आर्कटिक के संदर्भ में रूस-अमेरिका संबंधों की गतिशीलता को समझना है। यह अध्ययन उन परिवर्तनों का विश्लेषण करेगा जो आर्कटिक के भीतर सुरक्षा वातावरण में उभर रहे हैं और रूस और अमेरिकी कार्रवाई क्षेत्र के सैन्यीकरण को कैसे आगे बढ़ा रही है। ये घटनाक्रम न केवल दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करते हैं, बल्कि आर्कटिक परिषद के कामकाज में दरारें भी पैदा कर सकते हैं। यह चीन के लिए आर्कटिक के बढ़ते महत्व और आर्कटिक क्षेत्र में रूस-अमेरिका गतिशीलता पर इसके प्रभाव में भी कारक होगा। यह शोध भारत के लिए आर्कटिक के रणनीतिक महत्व को भी देखता है।

कीवर्ड: आर्कटिक, आर्कटिक परिषद, चीन, भारत, सैन्यीकरण, नाटो, *एनओआरएडी*, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका.

[I] प्रस्तावना

आर्कटिक दुनिया का सबसे उत्तरी क्षेत्र है जो आर्कटिक सर्कल के उत्तर में स्थित है, जिसमें उत्तरी ध्रुव और आर्कटिक महासागर शामिल हैं। यह 14.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करता है और आठ देशों से घिरा हुआ है- कनाडा, फिनलैंड, ग्रीनलैंड (डेनमार्क का साम्राज्य), आइसलैंड, नॉर्वे, रूसी संघ, स्वीडन और संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) जिसे आमतौर पर आर्कटिक आठ के रूप में जाना जाता है।

मानचित्र एक: आर्कटिक प्रशासनिक क्षेत्र

स्रोत: मानचित्र: आर्कटिक केंद्र, लैपलैंड विश्वविद्यालय. सीमा डेटा के लिए क्रेडिट: रूंफोला डी, एंडरसन ए, बेयर एच, क्रिटेंडन एम, डाउकर ई, फ्यूरिंग एस, एट एल. (2020) भू-सीमाएं: राजनीतिक प्रशासनिक सीमाओं का एक वैश्विक डेटाबेस। पीएलओएस वन 15(4): e0231866. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0231866

कई लोगों के लिए, आर्कटिक प्राचीन पर्यावरण और कम जीवन के साथ चरम मौसम की स्थिति का पर्याय है। फिर भी, पुरातत्वविदों और मानवविज्ञानियों दोनों के लिए, जिन्होंने शुरुआती मनुष्यों के विकास और प्रवास का अध्ययन किया है, आर्कटिक में हिम युग के बाद से या लगभग 30,000 वर्षों के लिए यूरोप और उत्तरी अमेरिका के महाद्वीप के बीच महत्वपूर्ण भूमि लिंक प्रदान करने के लिए मानव उपस्थिति रही है। यह भी परिकल्पना की गई है कि आर्कटिक क्षेत्र से शुरुआती मनुष्यों के प्रवास ने मध्य एशिया, फारस और दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों को आबाद किया[i]। जबकि आर्कटिक को अपना घर कहने वाले पहले मनुष्यों

के बारे में बहुत कम जाना जाता है, "आज आर्कटिक में लगभग 4 मिलियन लोग रहते हैं और लगभग 500,000 स्वदेशी लोग हैं[ii]।

आर्कटिक ने उन खोजकर्ताओं को भी आकर्षित किया है जिन्होंने अज्ञात क्षेत्र का पता लगाने और इसके कई खजाने की खोज करने के लिए इस क्षेत्र की यात्रा की है। आर्कटिक की यात्रा करने वाला पहला यूरोपीय समुद्री अन्वेषक, 330 बी.सी. में ग्रीक पाइथियास था[iii]। 1000 ईस्वी में, वाइकिंग्स ने अपने डोमेन का विस्तार करने के प्रयास में आर्कटिक में यात्रा की और ग्रीनलैंड, अलास्का और कनाडा पर विजय प्राप्त की। उन्होंने व्यापार के लिए नए मार्गों को विकसित करने और अपनी बढ़ती आबादी के लिए अधिक भूमि का अधिग्रहण करने के लिए वहां अपनी कॉलोनियों की स्थापना की। आधुनिक समय में, जैसे-जैसे वाणिज्य के समुद्री मार्ग महत्वपूर्ण हो गए और व्यापार के लिए वैकल्पिक समुद्री मार्गों की खोज महत्वपूर्ण हो गई, इसने समुद्री अन्वेषण में वृद्धि को प्रेरित किया। ऐसा ही एक क्षेत्र आर्कटिक के साथ नॉर्थवेस्ट पैसेज के माध्यम से अटलांटिक से प्रशांत महासागर तक का मार्ग था।

औद्योगिक क्रांति और परिणामी तकनीकी क्रांति ने कच्चे माल और नए बाजारों दोनों की मांग में वृद्धि की। इसके परिणामस्वरूप नए बाजारों तक पहुंचने के लिए प्रतिस्पर्धा से आर्कटिक समुद्री मार्गों को नियंत्रित करने की दौड़ हुई। आर्कटिक में प्राकृतिक संसाधनों की खोज ने रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को और बढ़ाया और देशों ने इस क्षेत्र में अपने निवेश में वृद्धि की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, आर्कटिक सहयोगियों के लिए एक प्रमुख रणनीतिक क्षेत्र के रूप में उभरा। यह महाद्वीप पर लड़ने वाले सहयोगी बलों के लिए प्रमुख सुदृढीकरण की आपूर्ति करने के लिए एक सबसे छोटा और सबसे सीधा मार्ग था। यह क्षेत्र युद्ध में एक महत्वपूर्ण थिएटर बन गया, जर्मनी ने इस मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए अपनी पनडुब्बियों का उपयोग किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था का ध्रुवीकरण आर्कटिक के तेजी से सैन्यीकरण में अनुवादित हुआ। जैसे-जैसे शीत युद्ध आगे बढ़ा, आर्कटिक दोनों शक्ति ब्लॉकों के लिए एक राजनीतिक और रणनीतिक क्षेत्र में बदल गया। "इस अचानक वृद्धि का एक कारण दो नई बढ़ी हुई महाशक्तियों के बीच भौगोलिक संदर्भ में 'निकट-नेस' था। मुख्य भूमि रूस और मुख्य भूमि अलास्का के बीच सबसे संकीर्ण दूरी लगभग 55 मील है। हालांकि,अलास्का और रूस के बीच पानी के शरीर में, जिसे बेरिंग स्ट्रेट के रूप में जाना जाता है, दो छोटे द्वीप हैं जिन्हें बिग डायोमेड और लिटिल डायोमेड के रूप में जाना जाता है। दिलचस्प बात यह है कि बिग डायोमेड रूस के स्वामित्व में है जबकि लिटिल डायोमेड का स्वामित्व अमेरिका के पास है। इन दो द्वीपों के बीच पानी का खिंचाव केवल 2.5 मील चौड़ा है [iv]। प्रतिद्वंद्वियों के बीच निकटता का मतलब सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकता थी।

द्वितीय विश्व युद्ध ने आर्कटिक क्षेत्र के सैन्य महत्व पर प्रकाश डाला था। सोवियत उत्तरी बेड़े की स्थापना देश की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं और आर्कटिक समुद्री मार्गों की रक्षा करने वाले सोवियत जमीनी बलों का

समर्थन करने के लिए की गई थी। जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ, यह सोवियत नौसेना की एक शक्तिशाली शाखा के रूप में उभरा, जिसकी उच्च समुद्रों तक पहुंच थी और आर्कटिक के माध्यम से, व्लादिवोस्तोक में स्थित प्रशांत के लिए सोवियत बेड़े के साथ संवाद किया गया था। युद्ध के दौरान एक्सिस विरोधी सहयोग के लिए जिन मार्गों का उपयोग किया गया था, उनका उपयोग अब द्वि-ध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए किया जा रहा था। अत्यधिक सैन्य निर्माण के साथ-साथ, आर्कटिक क्षेत्र में गुप्त जासूसी गतिविधियां भी देखी गईं और यहां कुछ परमाणु परीक्षण भी किए गए। जैसे-जैसे शीत युद्ध आगे बढ़ा, आर्कटिक के सैन्यीकरण ने गति बनाए रखी। आर्कटिक क्षेत्र दो महाशक्तियों के बीच सैन्य वृद्धि के लिए एक मंच बन गया, जिससे क्षेत्र के मुद्दों से निपटने के लिए एक सहकारी ढांचे के विकास के लिए बहुत कम जगह बच गई।

शीत युद्ध के परिणामस्वरूप, आर्कटिक को सीमित बातचीत के साथ पूर्वी और पश्चिमी वर्गों में विभाजित किया गया था। लोगों से लोगों के संपर्क और / या राज्य-से-राज्य संचार की कमी काफी हद तक राष्ट्रीय नीतियों को निर्देशित करने वाली सुरक्षा चिंता का परिणाम थी। सहयोग के संभावित क्षेत्र के रूप में देखे जाने के बजाय, आर्कटिक को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हित के साथ एक सैन्य थिएटर के रूप में एक सुरक्षा प्रिज्म के माध्यम से देखा गया था। आर्कटिक परिषद की स्थापना के साथ 20 वीं शताब्दी के अंत में पहली पहल की गई।

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास जैसे सामान्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए ढांचे की नींव को 1987 में मुरमांस्क में तत्कालीन सोवियत महासचिव मिखाइल गोर्बाचेव द्वारा दिए गए एक भाषण में खोजा जा सकता है। लोकप्रिय रूप से मुरमांस्क पहल के रूप में जाना जाता है, भाषण ने कई नीतिगत पहलों को रेखांकित किया जो एकीकृत पैकेज में सुरक्षा, आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों की एक श्रृंखला को एक साथ बांधते हैं[v]। अपने भाषण में, गोर्बाचेव ने कहा कि, "सोवियत संघ मौलिक रूप से सैन्य टकराव के स्तर को कम करने के पक्ष में था। दुनिया के उत्तर, आर्कटिक को शांति का क्षेत्र बनने दें[vi]। (महत्व दिया गया)। गोर्बाचेव ने आर्कटिक में सैन्य गतिविधि की सीमा पर पूर्वी और पश्चिमी गोलार्धों के बीच बातचीत का प्रस्ताव रखा[vii]। इस कदम का सबसे प्रमुख परिणाम 1996 में आर्कटिक परिषद की स्थापना थी।

आर्कटिक परिषद आर्कटिक के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंतर-सरकारी मंच है। इसकी स्थापना के बाद से, यह एक महत्वपूर्ण तंत्र बन गया है जिसके माध्यम से आठ आर्कटिक राज्य एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। यह आर्कटिक स्वदेशी लोगों और पर्यवेक्षकों के एक विविध और बढ़ते समूह की सक्रिय भागीदारी के लिए भी जगह है। परिषद आर्कटिक देशों के लिए पर्यावरण, पारिस्थितिक और सामाजिक परियोजनाओं पर बातचीत और सहयोग के लिए एक मंच प्रदान करती है।

आर्कटिक परिषद और शीत युद्ध के बाद बदलते अंतरराष्ट्रीय प्रणाली, सुरक्षा मुद्दों से ध्यान केंद्रित करते हुए दोनों देशों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने के लिए एक उपयुक्त क्षण प्रदान करता है। आर्कटिक क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान रूस और अमेरिका और अन्य देशों के बीच सहयोग का प्राथमिक केंद्र बन गया जो आर्कटिक सर्कल को घेरते हैं। हालांकि,एक बर्फ मुक्त आर्कटिक की बढ़ती प्राप्ति, इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों की खोज की संभावना, रूस और अमेरिका के बीच वर्तमान विरोधी संबंध के साथ-साथ इस क्षेत्र का रणनीतिक भू-राजनीतिक महत्व दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा को पुनर्जीवित कर रहा है और संभवतः आर्कटिक में उनके संबंधों को भी प्रभावित करेगा।

शोध-पत्र रूस और अमेरिका पर ध्यान केंद्रित करने के साथ आर्कटिक के लिए भू-रणनीतिक दृष्टिकोण का अध्ययन करने का एक प्रयास है। शोध-पत्र जलवायु परिवर्तन की पर्यावरणीय लागतों और इसके द्वारा प्रस्तुत आर्थिक अवसरों को देखता है। यह आर्कटिक की रक्षा में रूस और अमेरिका के बीच सहयोग के लिए एक क्षेत्र के रूप में आर्कटिक परिषद का भी विश्लेषण करता है।

शोध-पत्र को पांच व्यापक वर्गों में संरचित किया गया है - पहला खंड आर्कटिक के बढ़ते रीफोकस से संबंधित है। यह इस क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव और परिणामस्वरूप आर्थिक और भू-रणनीतिक विवाद का पता लगाता है। दूसरे खंड में, आर्कटिक के प्रति रूसी दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। यह क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व और रूसी विदेश नीति के लिए सुरक्षित आर्कटिक की उभरती चेतना पर जोर देता है। तीसरा खंड अमेरिकी विदेश और सुरक्षा नीति के प्रतिमानों में आर्कटिक से संबंधित विभिन्न कथाओं को समझने की कोशिश करता है। यह इस क्षेत्र में बदलती गतिशीलता और अमेरिका द्वारा उठाए गए कदमों को देखता है ताकि कभी-कभी बदलते आर्कटिक में अपनी स्थिति को मजबूत किया जा सके। चौथा खंड भारत की विकसित आर्कटिक नीति की एक संक्षिप्त झलक प्रदान करता है और यह अमेरिका और रूस दोनों के साथ कैसे सहयोग कर रहा है। पांचवां और समापन खंड आर्कटिक पर अमेरिका-रूस संबंधों के प्रभाव का आकलन प्रदान करता है।

[I] (क) आर्कटिक पर फिर से ध्यान केंद्रित करना

पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव आर्कटिक के महत्व के उद्भव के पीछे प्रेरक शक्ति रहा है। जलवायु में परिवर्तन आर्कटिक महासागर में समुद्री बर्फ के पिघलने, जमीन पर ग्लेशियरों और पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने के लिए अग्रणी हैं। इसने वैज्ञानिकों को चिंतित कर दिया है क्योंकि इसके आर्कटिक पारिस्थितिकी तंत्र और मौसम के पैटर्न और दुनिया भर में महासागर के तापमान दोनों के लिए परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, कम समुद्री बर्फ के आर्कटिक की पारिस्थितिकी के लिए विनाशकारी परिणाम होने की संभावना है जो ध्रुवीय भालू, बर्फ पर निर्भर मुहरों और स्थानीय लोगों की आबादी को प्रभावित करती है, जिनके लिए ये जानवर एक खाद्य स्रोत हैं। एक अन्य परिणाम पृथ्वी की सतह तक पहुंचने वाले पराबैंगनी विकिरण में वृद्धि होगी[viii]। भारत और बांग्लादेश जैसे देश, जो आर्कटिक राष्ट्र नहीं हैं, लेकिन घनी आबादी वाले समुद्र

तटों को समुद्र के पानी के स्तर में वृद्धि और समुद्र के पानी के तापमान में परिवर्तन के कारण मूल्यवान समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के विनाश के कारण तटीय क्षरण के परिणामस्वरूप लाखों लोगों को विस्थापित करने की संभावना का सामना करना पड़ता है।

तटीय पारिस्थितिक तंत्र समुद्र के स्तर की वृद्धि से प्रभावित हुए हैं, हालांकि,समुद्र के स्तर में वृद्धि के लिए इस तरह के परिवर्तन को जिम्मेदार ठहराते हुए अन्य गैर-जलवायु से संबंधित कारको जैसे कि बुनियादी ढांचे के विकास और मानव प्रेरित आवास गिरावट के कारण चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। इन गैर-जलवायु कारको ने तटीय पारिस्थितिक तंत्र की जलवायु प्रेरित परिवर्तनों के अनुकूल होने की क्षमता को कम कर दिया है। सदी के दौरान समुद्र स्तर वृद्धि (एसएलआर) का प्रभाव महंगा पारिस्थितिक तंत्र और निवास स्थान, जैव विविधता के नुकसान को प्रभावित करेगा, और प्रवासन का कारण बनेगा। समुद्र के स्तर में वृद्धि विश्व स्तर पर समान नहीं है और क्षेत्रीय रूप से भिन्न होती है। समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रभाव के बारे में बड़ी अनिश्चितताएं भविष्य की योजना के लिए हानिकारक हैं और सरकारों और विभागों के भीतर और उनके बीच नीतिगत समन्वय की चुनौतियों को बढ़ाती हैं। समुद्र के स्तर में वृद्धि की प्रतिक्रियाएं उन सबसे कमजोर लोगों को हाशिए पर रखने के बारे में इक्विटी चिंताओं को भी उठाती हैं और संभावित रूप से सामाजिक संघर्ष को चिंगारी या यौगिक कर सकती हैं[ix]। आर्कटिक में परिवर्तन के कारण वैश्विक मौसम के पैटर्न में बदलाव के परिणामस्वरूप मानसून के पैटर्न में परिवर्तन, कठोर सर्दियों और यूरोप और एशिया के देशों में अधिक गंभीर ग्रीष्मकाल सहित मौसम की घटना में बदलाव हुआ है। यह देखा गया है कि महासागर वार्मिंग फाइटोप्लांकटन से लेकर व्हेल जैसे बड़े समुद्री स्तनधारियों तक के जीवों के जैवभूगोल में परिवर्तन में योगदान देता है। यह समुद्री जीवों की सामुदायिक संरचना को भी प्रभावित करता है, और कुछ मामलों में, जीवों के बीच बातचीत के तरीकों को बदल देता है। स्थानिक वितरण और मछली स्टॉक की बहुतायत में वार्मिंग-प्रेरित परिवर्तनों ने पहले से ही कुछ महत्वपूर्ण मत्स्य पालन और उनके आर्थिक लाभों के प्रबंधन को चुनौती दी है[x]। महासागर के तापमान में परिवर्तन महासागर की धारा परिसंचरण को प्रभावित करेगा जो बदले में समुद्री खाद्य श्रृंखला और निवास स्थान को प्रभावित करेगा जैसे कि छोटी मछलियों का प्रवास, प्रवाल भित्तियों का अस्तित्व आदि। इसका देशों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है क्योंकि बढ़ती हुई राष्ट्र समुद्री अर्थव्यवस्थाओं के विकास के लिए तत्पर हैं।

एक दूसरे हाथ, पतला और पीछे हटने आर्कटिक समुद्री बर्फ को एक अवसर के रूप में देखा जा रहा है। जैसा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रौद्योगिकियों के साथ एक परिवर्तन से गुजरती है, राष्ट्र दोनों तक पहुंचने के लिए नए मार्गों के माध्यम से कच्चे माल और बाजारों के नए स्रोतों की तलाश कर रहे हैं। उत्तरी सागर मार्ग[xi] (एनएसआर)[xii] और नॉर्थवेस्ट पैसेज के साथ समुद्र की बर्फ के गठन में कमी के कारण मौसम में पहले खुलने के साथ, यह संभव है कि भविष्य में इन मार्गों में यातायात में वृद्धि होगी जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को जोड़ने के नए रास्ते खुलेंगे।

मानचित्र दो: उत्तरी सागर मार्ग और उत्तर-पश्चिमी मार्ग

स्रोत:https://www.britannica.com/place/Northwest-Passage-trade-route

स्रोत:https://www.rt.com/business/425325-northern-sea-route-transit/

आर्कटिक समुद्र तल (ईईजेड और उच्च सागर) से खनिजों की संभावित खोज आर्कटिक में बढ़ती रुचि का एक और पहलू है। "तटीय राज्यों के अनन्य आर्थिक क्षेत्रों के भीतर सीबेड खनन और उच्च समुद्रों में समुद्री तट खनन या 'क्षेत्र' के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है जो राष्ट्रीय न्यायालयों से परे है[1xiii]। 2 अगस्त 2007 को, रूस ने आर्कटिक महासागर के तल पर अपना झंडा लगाने के लिए एक पनडुब्बी का उपयोग किया। बड़े पैमाने पर प्रतीकात्मक कदम तेल, गैस और खनिजों का दावा करने का एक प्रयास है जो आर्कटिक में पाए जाने की आशा है। आर्कटिक में खनिजों और हाइड्रोकार्बन की महत्वपूर्ण मात्रा होती है, जिसमें अनुमानित 90 बिलियन बैरल तेल और 44 बिलियन बैरल प्राकृतिक गैस शामिल है, जो लंबे समय तक बर्फ द्वारा संरक्षित

है। उद्योगों द्वारा खनिजों और धातुओं की बढ़ती मांग और भूमि-आधारित संसाधनों की इसी कमी ने समुद्री खनिज संसाधनों में रुचि में वृद्धि की है। फिनलैंड, ग्रीनलैंड, कनाडा, नॉर्वे और स्वीडन जैसे कई राज्यों ने इस क्षेत्र की खोज शुरू कर दी है[xiv.xv]। रूस के पास प्रचुर मात्रा में खनिज संसाधन हैं और इन क्षेत्रों में खोज और काम कर रहा है [xvi.xvii]। चीन, एक गैर-आर्कटिक देश भी ग्रीनलैंड के साथ निकटता से सहयोग करके इस क्षेत्र के खनिज क्षेत्र में लगा हुआ है[xviii]। चीनी फर्म ने क्वानेजफेल्ड खदान में निवेश किया है जबकि अन्य कंपनियां खनिज निष्कर्षण में शामिल हैं। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रीनलैंड तटीय क्षेत्र में "दुनिया के 9% कोयले और अन्य आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण खनिजों के साथ दुनिया के अनदेखे हाइड्रोकार्बन संसाधनों का 25% शामिल है"। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (2008) का अनुमान इस प्रकार है: "आर्कटिक सर्कल के उत्तर में वेस्ट ग्रीनलैंड-ईस्ट कनाडा प्रांत में 7.3 बिलियन बैरल तेल का औसत और 52 ट्रिलियन क्यूबिक फीट अज्ञात प्राकृतिक गैस का औसत"। ग्रीनलैंड यूएनसीएलओएस अनुलग्नक II, कला 4 द्वारा विनियमित प्रक्रिया का पालन करके 200 समुद्री मील से परे अपने अधिकारों का विस्तार करने में भी रुचि रखता है।

आर्कटिक में जलवायु परिवर्तन ने अवसर पैदा किए हैं, लेकिन साथ ही भू-रणनीतिक, भू-आर्थिक चुनौतियों के साथ-साथ क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र में आगे की समस्याओं की नींव रखी है। जलवायु परिवर्तन के डाउनसाइड्स में से एक किसी दिए गए क्षेत्र की स्थलाकृति को बदलने की क्षमता है। यह परिवर्तन (नए) क्षेत्रीय और समुद्री संप्रभुता के दावों को लागू करने में सक्षम है जिनके भविष्य में भू-रणनीतिक निहितार्थ हैं। इसने आर्कटिक आठ के समुद्री क्षेत्रों में अपने हितों की रक्षा के लिए क्षेत्र के देशों द्वारा क्षेत्र के बढ़ते सैन्यीकरण की संभावनाओं को बढ़ा दिया है। आर्कटिक परिषद के सदस्यों के बीच कई अतिव्यापी समुद्री दावे मौजूदा अंतरराष्ट्रीय शासनों को तनाव देंगे और परिषद के सदस्यों के बीच शक्ति राजनीति में वृद्धि करेंगे। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रूस के अलावा आर्कटिक परिषद के अधिकांश सदस्य अमेरिका के सहयोगी हैं और अधिकांश देशों में उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सदस्य भी हैं। हालांकि,यह उन्हें आर्कटिक में अपने हितों की बेहतर समझ बनाने की अनुमति देता है, लेकिन इसका मतलब हमेशा यह नहीं है कि मतभेद मौजूद नहीं हैं। उदाहरण के लिए, कनाडा और डेनमार्क (ग्रीनलैंड के माध्यम से) हंस द्वीप की स्थिति पर विवाद करना जारी रखते हैं। 31 मार्च, 2021 को, रूस ने एक अंतरराष्ट्रीय आयोग को दस्तावेज प्रस्तुत किए, जिसमें विशाल आर्कटिक महासागर समुद्र तल के कहीं अधिक का दावा किया गया था।

इसी तरह, हाल के वर्षों में महासागर की सीमा से सटे पांच देशों- रूस, अमेरिका, कनाडा, नॉर्वे और डेनमार्क (ग्रीनलैंड के अपने क्षेत्र के माध्यम से) ने दावा प्रस्तुत किया है कि आर्कटिक सीफ्लोर के कुछ बड़े हिस्से उनके महाद्वीपीय शेल्फ के प्राकृतिक विस्तार हैं, जिससे उन्हें उन क्षेत्रों पर अधिकार मिल रहे हैं। लेकिन रूस का नया दावा डेनमार्क से अतिरिक्त 200,000 वर्ग किलोमीटर और कनाडा से और भी अधिक लेगा। पांच आर्कटिक देशों में से चार ने यूएनसीएलओएस की पुष्टि की है। अमेरिका ने आज तक इस संधि की पुष्टि नहीं की है। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप पानी के वार्मिंग के साथ, कन्वेंशन राष्ट्रों के लिए

संयुक्त राष्ट्र की अपीलों के माध्यम से अपने संबंधित क्षेत्रीय दावों को स्थापित करने और महाद्वीपीय शेल्फ संयुक्त राष्ट्र उपसमिति (सीएलसीएस) की सीमाओं पर आयोग को प्रस्तुतियों की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक उपकरण बन गया है। देश 200 समुद्री मील के निशान से परे वैध आर्कटिक दावों का विस्तार करने के लिए यूएनसीएलओएस के विभिन्न प्रावधानों का उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, आर्कटिक ने आर्कटिक देशों और तत्काल गैर-आर्कटिक लोगों के लिए भू-राजनीतिक क्षेत्र में अपनी कुछ पूर्व-प्रतिष्ठा खो दी। सोवियत संघ के खतरे के साथ अब एक कारक नहीं है, दुनिया ने रूस के साथ घनिष्ठ संबंधों और एक-ध्रुवीय दुनिया के उदय पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि,जलवायु परिवर्तन के साथ आर्कटिक के संसाधनों की खोज की संभावना को खोलने के साथ, अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में प्रवाह, नई शक्तियों का उदय और रूस द्वारा शक्ति के पुनरुत्थान ने फिर से आर्कटिक के रणनीतिक महत्व को सामने लाया है।[xix] रूस और पश्चिम (आर्कटिक परिषद के सदस्यों सहित) के बीच 2014 के यूक्रेनी संकट के साथ गति ने आगे की भाप एकत्र की है, जिसने मास्को और अन्य सदस्यों को अपने दावों को वैध बनाने या आर्कटिक में अपने दावों का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया है। आर्कटिक आठ के दो सबसे शक्तिशाली सदस्यों- रूस और अमेरिका के बीच अंतर भी विचलन के अन्य क्षेत्रों में परिलक्षित होते हैं, जिसमें आर्कटिक भी शामिल है।

आर्कटिक परिषद आर्कटिक राज्यों, स्वदेशी समुदायों और अन्य आर्कटिक निवासियों के बीच सहयोग, समन्वय और बातचीत को बढ़ावा देने के लिए अग्रणी अंतर-सरकारी मंच है। परिषद के प्रयासों से हमेशा त्वरित परिणाम नहीं मिलते हैं, लेकिन इसने वर्षों से लगातार प्रगति की है। यह सुनिश्चित करने के अपने प्रयासों में सफल रहा है कि आर्कटिक में अत्यधिक संघर्ष उत्पन्न न हो, भले ही परिषद सैन्य सुरक्षा के मुद्दों को नहीं देखती है। आर्कटिक राज्यों और अन्य पर्यवेक्षक राज्यों की रुचि में वृद्धि को देखते हुए परिषद व्यवस्था और स्थिरता को बनाए रखने और बनाए रखने में कितनी दूर तक सक्षम होगी, यह देखा जाना बाकी है। जैसा कि आर्कटिक वैश्विक चिंता का केंद्र बनने के लिए अंतरराष्ट्रीय मामलों के हाशिये से आगे बढ़ गया है, क्षेत्रीय शासन को कैसा दिखना चाहिए, यह सवाल तेजी से लोड हो गया है। जैसा कि आर्कटिक परिषद उस सवाल का जवाब देने की कोशिश करना जारी रखती है, दांव केवल बढ़ेगा[xx]। जलवायु परिवर्तन और चीन जैसे सदस्यों और पर्यवेक्षक राज्यों की महत्वाकांक्षाओं के कारण खुलने वाली कई संभावनाओं के साथ, परिषद के भीतर जटिलताएं अपरिहार्य लगती हैं। परिषद ने अपने गैर-राज्य सदस्यों की राय के साथ आर्कटिक आठ के विचारों को संतुलित करने की कोशिश की है। यह ऑब्जर्वर राज्यों सहित सभी सदस्यों को सूचीबद्ध करके अपने संचालन में संभ्रांतवादी और पदानुक्रमित है। यह वास्तविकता के साथ अपनी विशिष्ट "उत्तरी आवाज" और अभिविन्यास की रक्षा करने की आवश्यकता को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है कि आर्कटिक सर्कल से दूर वैश्विक अभिनेता अपने विचार-विमर्श और अनुसंधान में भाग लेने में तेजी से रुचि रखते हैं[xxi]। जैसा कि पर्यवेक्षक सदस्यों की संख्या में वृद्धि होती है, परिषद को अपने

सदस्य राज्यों के हितों को संतुलित करते हुए इन गैर-आर्कटिक सदस्यों के हितों को भी ध्यान में रखना होगा।

[II] आर्कटिक में रूस

इस क्षेत्र में रूस के परिचय का पता 11 वीं शताब्दी में लगाया जा सकता है जब रूसी नाविकों ने आर्कटिक के तटीय पानी को छुआ था। 17 वीं शताब्दी तक, यह काफी हद तक भौगोलिक, आर्थिक और आध्यात्मिक खोज थी, जिसमें मठों की स्थापना की जा रही थी। इस क्षेत्र का रणनीतिक महत्व 18 वीं शताब्दी से प्रमुखता में आया जिसने एनएसआर (यूरोपीय रूस को सुदूर पूर्व से जोड़ने वाला सबसे छोटा मार्ग) को विकसित करने की दृष्टि का नेतृत्व किया[xxii]। आर्कटिक का सैन्यीकरण द्वितीय विश्व युद्ध में सोवियत संघ और अमेरिका[xxiii] के रूप में शुरू हुआ, जिसमें विदेशों में परमाणु हथियारों[xxiv] को वितरित करने में सक्षम रणनीतिक बमवर्षक विकसित किए गए थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के बाद से, आर्कटिक का महत्व पिछली शताब्दी में रूस के लिए मोम और कम हो गया है। हालांकि,पिछले दो दशकों में, यह क्षेत्र रूस की विदेश नीति, रक्षा और आर्थिक पत्रों में शामिल रहा है, जिसमें रूसी उप प्रधान मंत्री दिमित्री रोगोजिन ने 2015 में हाइलाइट किया था कि "आर्कटिक रूसी मक्का है"[xxv]। सबसे बड़ी आर्कटिक शक्ति और एक प्रमुख हितधारक के रूप में, रूसी संघ (एजेडआरएफ) के आर्कटिक क्षेत्र के तहत आर्कटिक में कोई भी विकास ब्याज उत्पन्न करने के लिए बाध्य है, विशेष रूप से वर्तमान वैश्विक संदर्भ में। क्षेत्र के रूसी पक्ष का विकास रूस के घरेलू आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह इसे आर्कटिक सर्कल के भीतर और बाहर दोनों देशों के साथ वैज्ञानिक सहयोग, ऊर्जा सहयोग आदि में संलग्न होने के लिए स्थान भी प्रदान करता है।

[II] (क) रूस के लिए आर्कटिक का महत्व

1960 के दशक के बाद से, आर्कटिक ने रूसी प्रारंभिक चेतावनी रडार के लिए आधार के रूप में कार्य किया है[xxvi]। इस क्षेत्र ने लंबी दूरी की क्रूज मिसाइलों के साथ-साथ अमेरिकी और सोवियत आईसीबीएम से लैस दोनों रणनीतिक बमवर्षकों के लिए एक-दूसरे को लक्षित करने के लिए सबसे छोटा उड़ान मार्ग प्रदान किया। यह सोवियत संघ और अमेरिका द्वारा एसएसबीएन की तैनाती के लिए सबसे प्रशंसनीय क्षेत्र भी था शीत युद्ध के दौरान परमाणु प्रतिरोध सुनिश्चित करने और अमेरिका द्वारा किसी भी दावे का मुकाबला करने के लिए, सोवियत संघ के उत्तरी सागर बेड़े (एनएफ) ने आर्कटिक (कोला प्रायद्वीप) में संचालित किया। बेड़े में सतह लड़ाकू जहाज और एसएसबीएन शामिल थे। यह एक 'नौसैनिक किला' था जिसे आर्कटिक में नाटो बेड़े से संभावित घुसपैठ और हमले को रोकने के लिए स्थापित किया गया था[xxviii]।

रूसी आर्कटिक आउटलुक विकसित करना

इस क्षेत्र के महत्व को विभिन्न नीतियों में अपनी जगह मिली जो क्रेमलिन ने 2004, 2008 में पेश की थी और 2020 में अपडेट की गई थी ('आर्कटिक के लिए रूसी संघ की नीति 2035 तक'। यह नीति एक दीर्घकालिक योजना है)। इन नीतियों ने आर्कटिक में रूस के मुख्य लक्ष्यों और रणनीतिक प्राथमिकताओं को परिभाषित किया, जो हैं - सामाजिक-आर्थिक विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास; एक अद्यतित सूचना और दूरसंचार अवसंरचना का निर्माण; आर्कटिक में पर्यावरण सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग[xxix]।

इस क्षेत्र का महत्व राष्ट्रपति पुतिन के भाषणों के साथ-साथ देश की विदेश नीति या अन्य रणनीतिक दस्तावेजों में भी सामने आता है। 2011 आर्कटिक फोरम में, अर्खांगल्सक के सफेद सागर बंदरगाह में एक सम्मेलन की बैठक में, राष्ट्रपति पुतिन ने कहा, "मैं एक अंतरराष्ट्रीय धमनी के रूप में एनएसआर के महत्व पर जोर देना चाहता हूं जो पारंपरिक व्यापार लेन (जैसे स्वेज नहर[xxx]) को प्रतिद्वंद्वी करेगा। यह यूरोप के सबसे बड़े बाजारों और एशिया-प्रशांत क्षेत्र के बीच सबसे छोटा मार्ग होगा जो आर्कटिक में स्थित है[xxxi]। राष्ट्रपति पुतिन ने कहा है कि रूस 2024 तक एनएसआर पर यातायात को 30 मिलियन टन से कम के सभी ट्रैफ़िक से बढ़ाकर 80 मिलियन टन करना चाहता है।

सोवियत संघ - और अब रूस - ने दावा किया है कि एनएसआर के कुछ हिस्सों, जैसे कि विल्कित्स्की, शोकलस्की, दिमित्री लैपटेव, सैनिकॉन स्ट्रेट और कार्स्की सागर में सभी जलडमरूमध्य 'आंतरिक जल' हैं[xxxii]। इसका मतलब यह है कि अन्य जहाजों को इन जल में प्रवेश करने के लिए रूस से अनुमति की आवश्यकता होगी। इन वर्षों में रूस के भीतर मार्ग ने महत्व प्राप्त किया है क्योंकि यह अपने दूरस्थ सुदूर पूर्व को विकसित करने की योजना बनाता है। प्रस्तावित मार्ग सुदूर पूर्व को न केवल रूस के पश्चिमी क्षेत्रों से बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से भी जोड़ेगा। रूस एनएसआर को एक व्यवहार्य वाणिज्यिक मार्ग में बदलना चाहता है, जो स्वेज नहर का विकल्प प्रदान करता है। जबकि एनएसआर आर्कटिक क्षेत्र में एकमात्र परिवहन मार्ग नहीं है, यह स्वेज पर एक लाभ प्रदान करता है कि यह शिपिंग समय बचाता है। आर्कटिक सर्कल की परिधि के कारण मार्ग पर शिपिंग तेजी से है, जो कि ट्रॉपिक कैंसर की तुलना में दो गुना छोटा है, जो कि स्वेज नहर के करीब है। हालांकि,अन्य नुकसान हैं जो मार्ग के समय की बचत के लाभ को ढंकते हैं। लागत और क्या अभी भी बर्फ से भरा पानी है के माध्यम से यात्रा में विशेषज्ञता. फिर भी, रूस एनएसआर को एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में विकसित करना जारी रखता है। इस मार्ग की क्षमताओं को विकसित करने के लिए, रूस ने 2014 में अधिक परमाणु आइसब्रेकर बेड़े के निर्माण के लिए 38 बिलियन रूबल (यूएस $ 1.2 बिलियन) खर्च करने का फैसला किया, जो मार्ग तक पहुंचने में मदद करेगा। दिसंबर 2018 में, रूस का राज्य के स्वामित्व वाला परमाणु निगम रोसाटोम रूस के आइसब्रेकर के बेड़े की मदद से इस मार्ग का उपयोग कर सकता है[xxxiii.xxxiv]।

आर्थिक महत्व

शीत युद्ध के दौरान, सोवियत संघ ने अपने आर्कटिक क्षेत्रों को कनाडा या अलास्का में अमेरिका में भौगोलिक रूप से तुलनीय क्षेत्रों से अलग तरीके से विकसित किया। रूस ने पूर्ण पैमाने पर औद्योगिक सुविधाओं, बुनियादी ढांचे और बड़ी स्थायी बस्तियों का निर्माण किया[xxxv]। अपने आर्कटिक क्षेत्र में रूस का ध्यान एकाग्रता और लापरवाही के चरणों से गुजरा। सोवियत संघ के समय के दौरान, रूसी सरकार ने आर्कटिक क्षेत्र में एक मजबूत औद्योगिक परत रखी। आर्थिक गतिविधि के पैमाने ने अन्य सर्कुलर देशों की गतिविधियों को पार कर लिया[xxxvi]। जबकि आर्कटिक क्रेमलिन के लिए बहुत महत्वपूर्ण था, विभिन्न घरेलू और बाहरी समस्याओं के कारण, यह अब इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता था- रणनीतिक रूप से, सैन्य रूप से और साथ ही आर्थिक रूप से भी[xxxvii]।

1918 कई रूसी शहरों का आर्कटिक से भी घनिष्ठ संबंध है। मुरमांस्क, उत्तर-पश्चिमी रूस में, आर्कटिक सर्कल में 125 मील की दूरी पर स्थित है और आर्कटिक सर्कल में आबादी के मामले में सबसे बड़ा शहर है। इसमें गहरे पानी का बंदरगाह है और यह रेलवे लाइनों के माध्यम से रूस के बाकी हिस्सों से जुड़ा हुआ है। प्रथम विश्व युद्ध में आपूर्ति बंदरगाह के रूप में 1915 में स्थापित यह शहर 1918 में बोल्शेविकों के विरुद्ध ब्रिटिश, फ्रांसीसी और अमेरिकी अभियान बलों के लिए एक आधार था। द्वितीय विश्व युद्ध में, मुरमांस्क ने एंग्लो-अमेरिकी काफिले के लिए मुख्य बंदरगाह के रूप में कार्य किया, जो आर्कटिक महासागर के माध्यम से यूएसएसआर को युद्ध की आपूर्ति करते थे। शहर अब एक महत्वपूर्ण मछली पकड़ने का बंदरगाह है, और इसका मछली-प्रसंस्करण संयंत्र यूरोप में सबसे बड़ा में से एक है। मुरमंस्क का बर्फ मुक्त बंदरगाह इसे अटलांटिक और विश्व समुद्री मार्गों तक अप्रतिबंधित पहुंच के साथ रूस का एकमात्र बंदरगाह बनाता है[xxxviii]। शहर Tiksi, लीना नदी के पास, भी टसरिस्ट समय के बाद से खोजकर्ताओं, व्यापारियों और मछुआरों के लिए आकर्षण का एक बिंदु रहा है। सोवियत सरकार के तहत, 1938 में इस शहर में एक बंदरगाह बनाया गया था और इसने 1959 में पहला बेस बिल्ड के साथ कई सैन्य ठिकानों की मेजबानी भी की थी। क्रेमलिन जल्द ही जिन 10 खोजों और बचाव केंद्रों को खोलने की योजना बना रहा है, उनमें से एक टिक्सी में होगा[xxxix]।

यह क्षेत्र, अपने समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों के साथ, देश को अपनी भू-रणनीतिक और भू-आर्थिक महत्वाकांक्षाओं में मदद करता है। यह क्षेत्र पश्चिम-साइबेरियाई, टिमानो-पेचरस्काया और पूर्व-साइबेरियाई क्षेत्रों जैसे प्रमुख तेल और गैस उत्पादक स्थानों का दावा करता है। रूस का मानना है कि ये ऊर्जा संसाधन देश की समग्र सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा की गारंटी देते हैं[xl]। 2008 में एक भाषण के दौरान, तत्कालीन रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने कहा कि रूस के सबसे बड़े कार्यों में से एक 'आर्कटिक को इक्कीसवीं सदी के लिए रूस के संसाधन आधार में बदलना' था[xli]। आर्कटिक कुल मिलाकर रूस के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 20 प्रतिशत और इसके राष्ट्रीय निर्यात का 22 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है[xlii]।

सामरिक और सैन्य महत्व

रूस इस क्षेत्र में अपने सैन्य उपकरणों का पुनर्निर्माण और उन्नयन कर रहा है। यह शीत युद्ध के दौरान की स्थिति के विपरीत है, जब क्षेत्र के सैन्यीकरण को सीमित करने पर जोर दिया गया था। कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस के महासचिव और सोवियत संघ के पहले राष्ट्रपति, मिखाइल गोर्बाचेव ने आर्कटिक में असैन्यीकरण और युद्ध का अखाड़ा बनने से क्षेत्र की सुरक्षा और 1987 में मुरमांस्क भाषण के दौरान सोवियत संघ और अमेरिका के बीच सहयोग के स्थान में बदलने के बारे में बात की। हालांकि,रूस और अमेरिका के बीच तनाव के फिर से उभरने और क्षेत्र में बढ़ते भू-राजनीतिक हित के साथ, रूसी पक्ष सहित इस क्षेत्र में सैन्यीकरण में रुचि का पुनरुत्थान हो रहा है।

2008 के नीति दस्तावेज 'आर्कटिक टू 2020 के लिए रूसी संघ की नीति', ने इस क्षेत्र में रूस के सैन्य उद्देश्यों को निर्धारित किया। दस्तावेज में कहा गया है कि, सैन्य सुरक्षा के क्षेत्र में आर्कटिक में रूस के लिए निम्नलिखित मुख्य फोकस होगा [xliii]:

- रूस को रूसी संघ के आर्कटिक क्षेत्र में स्थित रूसी संघ की राज्य सीमा की **रक्षा और संरक्षण** को देखने की आवश्यकता थी और,(महत्व दिया गया)
- रूस के आर्कटिक क्षेत्र में एक अनुकूल **ऑपरेटिव शासन का रखरखाव**, जिसमें रूसी संघ के सशस्त्र बलों, अन्य सेनाओं, सैन्य संरचनाओं और इस क्षेत्र में अंगों के सामान्य उद्देश्य सेनाओं (बलों) के समूहों की एक आवश्यक लड़ाई क्षमता का रखरखाव शामिल है। (महत्व दिया गया)

2020 में, रूस ने 2035 तक आर्कटिक में रूसी संघ राज्य नीति के अपने दूसरे 'बुनियादी सिद्धांतों'[xliv] (बुनियादी सिद्धांत 2035) को जारी किया। दस्तावेज़ अपने पूर्ववर्ती से जारी है और आर्कटिक को रूस के आर्थिक और रणनीतिक हितों के लिए महत्वपूर्ण के रूप में पहचानता है। बुनियादी सिद्धांत 2035 में विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और व्यवहार्य परिवहन गलियारे के रूप में एनएसआर के विकास पर जोर दिया गया है। आर्कटिक में रहने वाले लोगों की समृद्धि और कल्याण को बढ़ावा देना कुछ ऐसा है जो कुछ समय के लिए रूस की आर्कटिक विकास रणनीति और सामाजिक-आर्थिक विकास कार्यक्रम का ध्यान केंद्रित कर रहा है। पिछले रूसी आर्कटिक नीति दस्तावेज में रूसी आर्कटिक में स्वदेशी लोगों की भलाई में सुधार का भी उल्लेख किया गया था। हालांकि,लक्ष्यों को नए नीति दस्तावेज में राष्ट्रीय हित की स्थिति के लिए उन्नत किया गया है। सवाल यह है कि रूस किस हद तक अपने वादे पर खरा उतरेगा। स्वायत्त यामालो-नेनेट्स प्रांत के अपवाद के साथ, रूसी आर्कटिक के सभी क्षेत्रों में जनसंख्या में कमी देखी गई है और जब यह कल्याण, स्वास्थ्य देखभाल और आवास की बात आती है तो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है[xlv]। सैन्य और सुरक्षा आयामों में, आर्कटिक में रूस के विरुद्ध आक्रामकता को रोकने और आर्कटिक में सीमा गार्ड और तटरक्षक बलों को और विकसित करने के लिए सशस्त्र बलों की परिचालन क्षमता और तत्परता को बनाए रखने में बुनियादी सिद्धांत 2020 से निरंतरता है।

रूस की आर्कटिक सैन्य परिसंपत्तियों के रणनीतिक महत्व के संकेत में, राष्ट्रपति पुतिन ने उत्तरी बेड़े की स्थिति को उन्नत किया है। बेड़े, मुख्य रूप से मुरमंस्क के पास स्थित है, जिसे पहले अपग्रेड किया गया था और 2014 में एक जॉइन्ड स्ट्रैटेजिक कमांड नामित किया गया था, अब रूस में चार अन्य सैन्य जिलों में शामिल हो गया है। यह एक छत के नीचे रूस की आर्कटिक क्षमताओं के एक बड़े हिस्से को समेकित करता है और इसमें कोमी गणराज्य का क्षेत्र, आर्कांगेलस्क और मुरमांस्क के क्षेत्र और नेनेट्स स्वायत्त क्षेत्र शामिल हैं[xlvi]। 2017 तक, मास्को की सक्रिय रणनीतिक बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी (एसएसबीएन) बल में शामिल है, एक प्रोजेक्ट 667 बीडीआर कलमार (नाटो पदनाम: डेल्टा III) पनडुब्बियां रिबाची में प्रशांत बेड़े के साथ आधारित पनडुब्बियां और छह परियोजना 667बीडीआरएम डेल्फिन (डेल्टा IV) पनडुब्बियां यागेलनाया खाड़ी में उत्तरी बेड़े के साथ आधारित हैं। इसमें लिटसागुबा में उत्तरी बेड़े के साथ आधारित कई टाइफून-क्लास एसएसबीएन भी शामिल थे[xlvii]।

रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने अप्रैल 2019 में सेंट पीटर्सबर्ग में अंतर्राष्ट्रीय आर्कटिक फोरम में एक पैनल के दौरान उल्लेख किया कि रूस किसी को धमकी नहीं देता है। यह अपनी सीमाओं के आसपास की राजनीतिक और सैन्य स्थिति को देखते हुए पर्याप्त रक्षा क्षमताओं को सुनिश्चित करता है। उन्होंने आगे कहा कि देश अपनी सुरक्षा, हितों और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहेगा। अमेरिकी वायु सेना जनरल टेरेंस ओ'शॉनेसी, जो अमेरिकी उत्तरी कमान के प्रमुख हैं, ने वर्ष की शुरुआत (2019) में कहा कि आर्कटिक उत्तर में बढ़ती रूसी उपस्थिति के विरुद्ध देश की रक्षा की अग्रिम पंक्ति बन गया है [xlviii]। रूसी और अमेरिकी मिसाइल चेतावनी प्रणालियों के विभिन्न घटक आर्कटिक क्षेत्र में स्थित हैं। अमेरिकी वायु-रक्षा इंटरसेप्टर अलास्का में स्थित हैं, और रूसी एनालॉग्स आर्कटिक महासागर के तट पर स्थित हैं।[xlix] रूस के पास नोवाया ज़ेमल्या (आर्कटिक महासागर में रूस के उत्तर में एक द्वीपसमूह) पर एक परमाणु परीक्षण क्षेत्र भी है।

मानचित्र तीन: नोवाया जेम्ल्या

आर्कटिक देशों ने भी इस क्षेत्र में सैन्य अभ्यास किया है। 2013 में, रूस ने क्रूजर "पीटर द ग्रेट" और परमाणु पनडुब्बियों "ओरेल" और "वोरोनिश" का उपयोग करके सैन्य अभ्यास किया; और क्रूज मिसाइलों का

प्रक्षेपण किया। जवाब में, अमेरिका ने 2013 में बोथनिया की खाड़ी में और बेरेंट्स सागर में स्वीडन, फिनलैंड और यूनाइटेड किंगडम की वायु सेनाओं की भागीदारी के साथ "आर्कटिक चैलेंज" प्रशिक्षण अभ्यास किया[lii]। 2015 में, रूस ने आर्कटिक में चीन के साथ समुद्री अभ्यास किया, जो अमेरिका द्वारा आर्कटिक परिषद की अध्यक्षता लेने के साथ मेल खाता था।

आर्कटिक में रूसी सैन्य उपस्थिति इसके राजनीतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक हितों से जुड़ी हुई है। विशेषज्ञों के अनुसार, "आर्कटिक में एक स्थायी सैन्य उपस्थिति रूस को एनएसआर के उच्च अक्षांश ट्रैक पर रूसी अकादमिक और आर्थिक क्षेत्रों के प्रतिनिधियों द्वारा विकसित क्षेत्र में विभिन्न अनुसंधान और अन्य अभियानों को काफी मजबूत करने की अनुमति देगी"। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, 2014 में रूसी संघ के रक्षा मंत्रालय ने वायु रक्षा प्रणाली को बढ़ाने, ट्रांसपोलर सैन्य हवाई क्षेत्रों का पुनर्निर्माण करने, न्यू साइबेरियाई द्वीप समूह पर सैन्य अड्डे को बहाल करने, क्षेत्र में अपनी सशस्त्र बलों की इकाइयों को अपग्रेड करने और यहां अधिक सैन्य अभ्यास करने की पहल शुरू की। एक महत्वपूर्ण कदम उत्तरी बेड़े पर आधारित संयुक्त रणनीतिक कमान "उत्तर" का निर्माण है[liii]।

उन क्षेत्रों में जहां देश को भविष्य में बाहरी सैन्य दबाव का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि क्रीमिया, कलिनिनग्राद, और आर्कटिक, रूस ने अपनी एंटी-एक्सेस / एरिया इनकार (ए 2 / एडी) क्षमताओं (हवा और मिसाइल रक्षा, सतह से सतह बैलिस्टिक मिसाइलों, भूमि, हवा और समुद्र में लॉन्च की गई क्रूज मिसाइल बैटरी, स्तरित पनडुब्बी-रोधी युद्ध क्षमताओं) को विकसित किया है[liii]। 2014 में, संयुक्त रणनीतिक कमान के गठन पर, राष्ट्रपति पुतिन ने कहा था कि उत्तरी बेड़े के संयुक्त रणनीतिक कमान के गठन ने आर्कटिक में सुरक्षा में वृद्धि की है। यह कमान इस क्षेत्र में सैन्य बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने में भी मदद करेगी, जो रूसी राष्ट्रीय हितों के लिए महत्वपूर्ण है[liv]। रूस ने आर्कटिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त टोर-एम 2 डी टी एंटी-एयरक्राफ्ट मिसाइल बटालियन का भी निर्माण किया है[lv]।

रूस ने इस क्षेत्र में कई स्थायी ठिकानों के निर्माण और विकास को भी चालू कर दिया है। इनमें एलेक्जेंड्रा द्वीप (फ्रांज जोसेफ लैंड द्वीपसमूह), कोटेलनी[lvi] द्वीप[lvii] (इस डिवीजन को अधिक सटीक और उच्च गति वाले हथियारों से लैस किया जाएगा),[lviii] स्रेदनी और रैंगल द्वीप समूह, नोवाया ज़ेमल्या, अलाकुरट्टी और केप श्मिट के गांव शामिल हैं। यह रूस की आर्कटिक गतिविधि में व्यापक स्वरूप को दर्शाता है। ये गतिविधियां भविष्य में मास्को को निगरानी चौकियों को स्थापित करने और प्रतीकात्मक क्षेत्रीय दावे को दांव पर लगाने में मदद करेंगी[lix]। रूस इस क्षेत्र में सोवियत युग के बंदरगाहों और हवाई क्षेत्रों को फिर से खोल रहा है और पुनर्निर्माण कर रहा है। 2015 के समुद्री सिद्धांत सहित अपने सैन्य सिद्धांतों में,[lx] रूस ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि अटलांटिक के अलावा आर्कटिक देश का ध्यान केंद्रित करेगा। सिद्धांत आगे आर्कटिक के महत्व को इंगित करके बताता है कि यह अटलांटिक और प्रशांत महासागरों तक निर्बाध

और मुक्त पहुंच में मदद करता है[lxi]। इन सभी गतिविधियों से रूस को इस क्षेत्र में अपनी रणनीतिक उपस्थिति के साथ-साथ अपने दावों की रक्षा करने में मदद मिलेगी।

क्षेत्रीय दावे

2001 में रूस ने बेसलाइन से 200 समुद्री मील से परे रूसी संघ के महाद्वीपीय शेल्फ की अपनी प्रस्तावित बाहरी सीमाओं को महाद्वीपीय शेल्फ (सीएलसीएस) की सीमाओं पर संयुक्त राष्ट्र आयोग को प्रस्तुत किया[lxii]। 2002 में, सीएलसीएस ने कहा कि रूस द्वारा प्रस्तुत आवेदन को यह साबित करने के लिए अतिरिक्त वैज्ञानिक सबूतों की आवश्यकता है कि आर्कटिक शेल्फ रूस के भूभाग का हिस्सा है। 2002 के बाद से, रूस ने लोमोनोसोव और मेंडेलीव लकीरों के लिए अपने अधिकारों को साबित करने के लिए सभी प्रयास किए हैं। इसने अपने सीएलसीएस अनुप्रयोग को मजबूत करने के लिए जानकारी एकत्र करने के लिए कई वैज्ञानिक अभियानों का आयोजन किया है, और उनमें से आर्कटिका 2007 ध्रुवीय अभियान था[lxiii]। सीएलसीएस ने अभी रूस के दावे पर कोई फैसला नहीं किया है। यदि निर्णय रूस के पक्ष में है, तो यह दो लकीरों, लोमोनोसोव और मेंडेलीव पर अधिकार रखने में सक्षम होगा[lxiv]। जबकि क्षेत्र के लिए अपनी आर्थिक नीतियों का विस्तार। रूस के लिए यह दावा एक रणनीतिक प्राथमिकता बन गया है। रूस के इस प्रयास से अन्य आर्कटिक देशों की ओर से हाथापाई शुरू हो गई है। वे न केवल रूस के दावों का विरोध कर रहे हैं**,** बल्कि आर्कटिक और आर्कटिक सीबेड में अपने क्षेत्रीय दावों को भी चिह्नित कर रहे हैं।

आर्कटिक क्षेत्र का कानूनी ढांचा गैर-बाध्यकारी नरम कानूनी कानूनों के तहत है जैसे कि आर्कटिक पर्यावरण संरक्षण रणनीति (एईपीएस) बाद में आर्कटिक परिषद और यूएनसीएलओएस में विकसित किया गया। पांच तटीय आर्कटिक परिषद के सदस्यों (रूस, अमेरिका, कनाडा, नॉर्वे और डेनमार्क) ने '2008 की इलुलिसैट घोषणा' को अपनाया है। इस घोषणा के अनुसार, यूएनसीएलओएस आर्कटिक के जिम्मेदार प्रबंधन के लिए एक ढांचे के रूप में सेवा करने के लिए पर्याप्त अधिकार और दायित्व प्रदान करता है और एक नई कानूनी प्रणाली व्यवस्था को लागू करना आवश्यक नहीं है[lxv]। रूस यूएनसीएलओएस का समर्थन करता है, फिर भी क्योंकि अमेरिका कन्वेंशन का पक्षकार नहीं है और अपने स्वयं के आर्कटिक शेल्फ[lxvi] के चित्रण से संबंधित इस कन्वेंशन के अनुच्छेद 76 में निर्धारित दायित्वों की गैर-पूर्ति रूस और इस क्षेत्र में इसके हितों के लिए असुविधा पैदा करती है।

रूस और अन्य आर्कटिक परिषद के सदस्यों, विशेष रूप से पांच तटीय सदस्यों के लिए एक और चिंताजनक कारक यह है कि यूएनसीएलओएस के अनुसार, सभी राज्यों, तटीय या नहीं, उच्च समुद्रों के साथ-साथ गहरे समुद्र तल के बारे में वैध अधिकार और हितों के अधिकारी हैं, आर्कटिक में अन्य महासागरों के रूप में, और इसलिए निर्णय लेने में भाग लेने में सक्षम हैं। यह सुनिश्चित करता है कि तेरह पर्यवेक्षक सदस्यों के पास आर्कटिक से संबंधित मामलों में समान रूप से कहना है।

रूस की आर्कटिक नीति पर प्रतिक्रियाएं

आर्कटिक में रूस की गतिविधियों, पिछले डेढ़ दशक में, अन्य क्षेत्रीय राज्यों से प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया है। एक पाता है कि आर्कटिक तेजी से रूस और अमेरिका दोनों के लिए एक भू-रणनीतिक और भू-आर्थिक प्राथमिकता बन गया है।

रूस की सीमाओं के पास राजनीतिक विकास जैसे यूक्रेन और जॉर्जिया में रंग क्रांतियों के साथ-साथ पश्चिम की नीतियों में अपारदर्शिता के साथ- साथ, विशेष रूप से अमेरिका, रूस की ओर, ने आर्कटिक में अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए उत्तरार्द्ध को धक्का दिया है। रूसी अकादमिक और रणनीतिक समुदाय ने हाल के वर्षों में आर्कटिक के महत्व पर अपने प्रवचन में भी वृद्धि की है।

सितंबर 2019 में रूसी रक्षा मंत्रालय ने इसे रणनीतिक कमांड स्टाफ अभ्यास आयोजित किया, जिसका कोडनेम टसेंट्र-2019 था[lxvii]। यह रूस का सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास था। इसने रूस के उत्तरी बेड़े, प्रशांत बेड़े और केंद्रीय सैन्य जिले को एक साथ लाया। यह सेवरनाया ज़ेमल्या के दूरस्थ द्वीपसमूह में आयोजित किया गया था[lxviii]। वायु रक्षा मिसाइलों, बख्तरबंद वाहनों, सभी इलाकों के वाहनों और समर्थन उपकरणों जैसे नए हथियारों की सीमा और क्षमताओं की जांच करने के अलावा, अभ्यास ने सशस्त्र बलों और हथियार प्रणालियों दोनों पर जलवायु स्थितियों के प्रभाव का भी परीक्षण किया[lxix]। अभ्यास की सफलता रूसी सरकार के लिए एक सकारात्मक विकास है, जो इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही है। वायु रक्षा मिसाइलों, बख्तरबंद वाहनों, सभी इलाकों के वाहनों और समर्थन उपकरणों जैसे नए हथियारों की सीमा और क्षमताओं की जांच करने के अलावा, अभ्यास ने सशस्त्र बलों और हथियार प्रणालियों दोनों पर जलवायु स्थितियों के प्रभाव का भी परीक्षण किया[lxix]। अभ्यास की सफलता रूसी सरकार के लिए एक सकारात्मक विकास है, जो इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही है।

अमेरिका और चीन के अलावा, रूस को अन्य आर्कटिक सदस्यों से भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आर्कटिक परिषद[lxx] के पांच सदस्य देश नाटो के सदस्य भी हैं, जिसका चार्टर सदस्य देशों को सामूहिक आत्मरक्षा के लिए प्रतिबद्ध करता है। फिनलैंड और स्वीडन विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अमेरिका के साथ साझेदारी करते हैं। हालांकि, आर्कटिक परिषद को सदस्य देशों के लिए एक फुलक्रम के रूप में काम करना चाहिए, हालांकि,यह रूस और अमेरिका के बीच बढ़ते अंतर को देखते हुए अविश्वास के माहौल से ग्रस्त है। फिनलैंड, नॉर्वे और स्वीडन जैसे सदस्यों को भी वर्तमान समय में सोवियत इतिहास के सामान से निपटना होगा।

[II] (ख) आर्कटिक में रूस के लिए चुनौतियां

रूस ने आर्कटिक को 21 वीं सदी के लिए एक रणनीतिक प्राथमिकता और एक संसाधन आधार दोनों के रूप में पहचाना है। आर्कटिक में उपलब्ध अवसरों के बारे में उम्मीदों की पृष्ठभूमि के विरुद्ध, रूस को इस क्षेत्र में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

रूस के लिए प्राथमिक चुनौती आर्कटिक क्षेत्र में नाटो और अमेरिकी बलों की बढ़ती उपस्थिति है। अमेरिका ने भी अपने विभिन्न नीति दस्तावेजों में रूस को बार-बार एक रणनीतिक प्रतियोगी के रूप में पहचाना है। दोनों देशों के बीच पहले से ही दूर के संबंधों को देखते हुए, यह कहना स्वाभाविक है कि रूस आर्कटिक के प्रति अमेरिकी नीतिगत विकास का बारीकी से पालन करेगा। इस तनाव में योगदान एनएसआर की कानूनी परिभाषा पर अलग-अलग विचार हैं। रूस एनएसआर को आंतरिक जल के रूप में देखता है, जहां जैसा कि अमेरिका इसे अंतरराष्ट्रीय मार्ग के हिस्से के रूप में देखता है, रूसी कानून को एनएसआर से गुजरने वाले विदेशी नौसैनिक जहाजों से उन्नत 45-दिवसीय चेतावनी की आवश्यकता होती है और रूसी आइसब्रेकर और सह-पायलटों के लिए शुल्क लेता है। अमेरिका ने नेविगेशन की स्वतंत्रता (एफओएन) संचालन के हिस्से के रूप में एनएसआर को शामिल किया है, जिसमें दावा किया गया है कि रूस का दावा यूएनसीएलओएस के विपरीत है। इस क्षेत्र में रूस के परिचालन फोकस का एक प्रमुख घटक कोला प्रायद्वीप के आसपास के क्षेत्र और समुद्रों की रक्षा और अमेरिका / नाटो बलों द्वारा इस क्षेत्र तक पहुंच से इनकार करना है।

बदलती अंतरराष्ट्रीय स्थिति भी रूस की आर्कटिक विकास योजनाओं के लिए एक चुनौती बनी हुई है। क्रीमिया में रूस की कार्रवाइयों के बाद, यूरोपीय संघ (ईयू) और अमेरिका ने उच्च रैंकिंग वाले रूसी अधिकारियों के विरुद्ध लक्षित प्रतिबंध लगाए, कई रूसी बैंकों और कंपनियों तक अमेरिकी ऋण बाजार तक पहुंच को सीमित करने वाले प्रतिबंध, उनमें से रोसनेफ्ट और नोवाटेक और विशिष्ट कंपनियों और उद्योगों को लक्षित करने वाले प्रतिबंध। रूसी आर्कटिक परियोजनाएं विशेष रूप से प्रभावित हुई हैं क्योंकि प्रतिबंधों ने आर्कटिक, गहरे समुद्र और शेल निष्कर्षण परियोजनाओं में आवश्यक उच्च तकनीक वाले तेल उपकरणों के रूस को निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। हालांकि,जैसा कि रूस आर्कटिक परिषद की अध्यक्षता ग्रहण करता है, यह इसे अमेरिका और अन्य आर्कटिक आठ देशों के साथ एक स्थायी आर्कटिक विकास योजना के लिए एक योजना पर काम करने का अवसर प्रदान करता है।

दूसरी चुनौती आर्कटिक में चीन की बढ़ती उपस्थिति है। रूस और चीन के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी ने दोनों देशों को अपने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों में संलग्न होने और सहयोग करने में मदद की है। रूसी नीति दस्तावेजों ने बार-बार पूर्व की ओर मुड़ने, एशियाई ऊर्जा बाजारों पर अधिक ध्यान देने और एशिया से निवेश को आकर्षित करने की आवश्यकता और इच्छा को प्रतिबिंबित किया है। यह नीतिगत परिवर्तन आर्कटिक क्षेत्र में दिखाई दे रहा है, जहां मॉस्को ऊर्जा क्षेत्र में बीजिंग के साथ जुड़ा हुआ है। अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिबंधों ने चीन को आर्कटिक विकास के लिए रूस को पूंजी की पेशकश करने

की अनुमति दी है। चीन के साथ-साथ रूस भारत और जापान के साथ ऊर्जा सहयोग की खोज कर रहा है। हालांकि, रूस और चीन के बीच विश्वास की कमी पर सवालिया निशान बना हुआ है। रूस को चीन और यूरोपीय और एशियाई उपभोक्ताओं के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की आवश्यकता है। फिलहाल, रूस चीन के साथ सहयोग कर रहा है लेकिन एक सीमित तरीके से। यह आकलन करना बहुत जल्दी है कि क्या शिपिंग सहयोग में एक बड़ी सफलता होगी, हालांकि, चीनी जहाजों ने एनएसआर के माध्यम से कुछ पहली प्रयोगात्मक यात्राएं की हैं।

रूसी अधिकारियों ने बार-बार कहा है कि गैर-आर्कटिक राज्यों का इस क्षेत्र में स्वागत है, खासकर अगर वे 'खेल के नियमों' का पालन करते हैं और विशेष रूप से, आर्कटिक राज्यों के संप्रभु अधिकारों और अधिकार क्षेत्र का सम्मान करते हैं[lxxi]।

सबसे बड़े आर्कटिक राष्ट्र के रूप में, यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन रूस के लिए एक चुनौती पैदा करेगा। देश दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में 2.5 गुना तेजी से गर्म हो रहा है और 2020 में रूस भर के क्षेत्रों ने रिकॉर्ड पर सबसे गर्म तापमान का अनुभव किया है[lxxii]। पर्माफ्रॉस्ट, जो रूसी क्षेत्र के लगभग दो-तिहाई हिस्से को कवर करता है, तेजी से पिघल रहा है, जिससे रूस के आर्कटिक शहरों के लिए नकारात्मक परिणाम हो रहे हैं। स्थायी रूप से जमे हुए 24 रूसी क्षेत्रों में से, नौ में व्यापक बुनियादी ढांचे और शहर शामिल हैं। ये क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे रूस के कच्चे माल के उत्पादन के थोक के लिए खाते हैं। पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से इमारतों और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को महत्वपूर्ण नुकसान होगा, जिसमें रूस की 200,000 किलोमीटर की तेल और गैस पाइपलाइनों के साथ-साथ हजारों मील की सड़कें और रेल लाइनें रूस की कुछ सबसे चौड़ी नदियों को पाटने के साथ शामिल हैं। उप-मिट्टी में अधिक नाटकीय फ्रीज-पिघलने वाले चक्र रूस के आर्कटिक शहरों में शहरी बुनियादी ढांचे को नष्ट कर रहे हैं, जो 2 मिलियन से अधिक लोगों का घर है। नवंबर 2020 में एक बयान में, रूसी सुदूर पूर्व और आर्कटिक के विकास के लिए उप मंत्री अलेक्जेंडर क्रुटिकोव ने कहा कि, आर्कटिक क्षेत्र में ग्लोबल वार्मिंग से प्रत्यक्ष नुकसान 2050 तक 2 से 9 ट्रिलियन रूबल ($ 99 बिलियन) तक हो सकता है। समाधान खोजने के प्रयास में, रूस ने आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों और संचार प्रणालियों का उपयोग करके एक निगरानी प्रणाली स्थापित की है। यह प्रणाली रूस को इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से लड़ने में कितनी मदद कर पाएगी, यह आने वाले समय में देखा जाना बाकी है। रूस के लिए चुनौती जलवायु परिवर्तन प्रक्रियाओं में न्यूनतम योगदान सुनिश्चित करते हुए आर्कटिक के लिए अपनी आर्थिक विकास योजनाओं को संतुलित करना होगा।

सेना की बढ़ती उपस्थिति के परिणामस्वरूप प्रदूषण पर बढ़ती चिंता उपर्युक्त से जुड़ी हुई है। जबकि यह सभी आर्कटिक आठ देशों को शामिल करता है, रूस में वर्तमान में इस क्षेत्र में सबसे बड़ी सैन्य उपस्थिति

है। मॉस्को ने फ्रांज-जोसेफ द्वीप और रैंगल द्वीप में सैन्य बुनियादी ढांचे द्वारा पीछे छोड़े गए धातु कचरे को साफ करने के लिए कदम उठाए हैं। इसने कोला प्रायद्वीप में तैनात कतिपय सोवियत नाभिकीय पनडुब्बियों को सुरक्षित रूप से निष्क्रिय करने और नष्ट करने और नाभिकीय अपशिष्टों के निपटान को सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाए हैं। हालांकि,सैन्य प्रदूषण अधिकांश जलवायु परिवर्तन नियमों के दायरे से बाहर रहता है और शायद ही कभी चर्चा की जाती है। रूसी सरकार औद्योगिक प्रदूषण के लिए आगे नहीं आ रही है। उन्हें अभी तक उद्योगों से रासायनिक संदूषण के लिए समाधान नहीं मिला है। इन पानी में कंटेनर जहाज और क्रूज जहाज की आवाजाही में वृद्धि के परिणामस्वरूप प्रदूषण से भी चिंता बढ़ रही है।

कुल मिलाकर, आर्कटिक रूस को अवसरों और चुनौतियों दोनों के साथ प्रस्तुत करता है। रूस अपनी भू-रणनीतियों, भू-आर्थिक और वैश्विक जलवायु परिवर्तन प्रतिबद्धताओं को कैसे संतुलित करता है, यह देखा जाना बाकी है।

[III] आर्कटिक में संयुक्त राज्य अमेरिका

अमेरिका एक आर्कटिक राष्ट्र बन गया जब उसने 1867 में 7.2 मिलियन डॉलर में रूसी साम्राज्य से 586,412 वर्ग मील भूमि खरीदी। तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री विलियम एच. सेवर्ड नए राष्ट्र की सीमाओं का विस्तार करना चाहते थे और अमेरिका को एक वैश्विक शक्ति बनाना चाहते थे। खरीद ने देश के क्षेत्र में वृद्धि की और अधिक प्राकृतिक संसाधनों को जोड़ा, जबकि अमेरिका को रूसी साम्राज्य के उत्तरी प्रशांत मार्च को रणनीतिक रूप से रोकने की अनुमति दी। आर्कटिक इसलिए आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा निहितार्थों के साथ शुरुआत से ही अमेरिका के लिए रणनीतिक हित का रहा है।

अमेरिका की आर्कटिक नीति के लिए चुनौती विभिन्न मुद्दों की एक श्रृंखला को संबोधित करना है जैसे कि मातृभूमि की रक्षा करना, पर्यावरणीय अनुकूलन का पीछा करना और लचीलापन का निर्माण करना, क्षेत्र की आर्थिक गतिशीलता को संबोधित करना और अग्रिम नीति निर्माण में संलग्न होने के दौरान बदलती सुरक्षा स्थिति का प्रबंधन करना। फिलहाल, नीति का एक स्पष्ट संकेत आगामी नहीं है क्योंकि अधिकांश दस्तावेज काफी हद तक वर्णनात्मक रहे हैं, जो उक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के मार्ग के बजाय इस क्षेत्र में अमेरिका के उद्देश्य को उजागर करते हैं। एक भारी आइसब्रेकर के लिए हाल ही में कांग्रेस के वित्त पोषण को छोड़कर, जिसका उपयोग मुख्य रूप से अंटार्कटिका में किया जाएगा, संसाधन आवंटन या नए संगठनात्मक संरचनाओं को स्थापित करने की आवश्यकता जो इन क्रॉस-कटिंग मुद्दों को अधिक कुशलता से संबोधित कर सकती है, को संबोधित नहीं किया गया है। हालांकि,दस्तावेज सरकार के लिए प्राथमिकताओं का एक सेट रखते हैं।

[III] (क) अमेरिका के लिए आर्कटिक का महत्व

अमेरिकी सरकार ने सरकारी रणनीतियों की एक श्रृंखला के माध्यम से आर्कटिक में अपनी मौलिक रुचि को व्यक्त किया है, जिसमें पहली अभिव्यक्ति 1971 में निक्सन प्रशासन द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय ज्ञापन (एनएसडीएम-144) है। एनएसडीएम ने कहा, "... संयुक्त राज्य अमेरिका आर्कटिक के ध्वनि और तर्कसंगत विकास का समर्थन करेगा ... और एक ही समय में आर्कटिक में आवश्यक सुरक्षा हितों की सुरक्षा के लिए प्रदान करेगा, जिसमें समुद्र और सुपरजेंट हवाई क्षेत्र की स्वतंत्रता के सिद्धांत का संरक्षण शामिल है[lxxiii]। (महत्व दिया गया)। 1983 के राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय निर्देश (एमएसडीडी-90) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अमेरिका ने "... आर्कटिक क्षेत्र में अद्वितीय और महत्वपूर्ण हित सीधे राष्ट्रीय रक्षा, संसाधन और ऊर्जा विकास, वैज्ञानिक जांच और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित हैं[lxxiv]। (महत्व दिया गया)।"

शीत युद्ध के दौरान, आर्कटिक के रणनीतिक स्थान ने क्षेत्र के प्रति नीति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उत्तरी अमेरिकी एयरोस्पेस डिफेंस कमांड (एनओआरडी) कनाडा के साथ एक रक्षात्मक वायु ढाल के रूप में स्थापित किया गया था, जो उनका मानना था कि लंबी दूरी के, मानवयुक्त सोवियत बमवर्षकों द्वारा संभावित हमले के विरुद्ध बचाव के लिए आवश्यक था। एक व्यक्ति पाता है कि पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव को समझने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। उपरोक्त दो दस्तावेज इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि जब धमकियों को शीत युद्ध के चश्मे से देखा जा रहा था, तो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का आह्वान भी किया गया था। यह संभावना है कि वैज्ञानिक सहयोग की परिकल्पना इस क्षेत्र में भागीदारों और सहयोगियों के साथ की जा रही थी और सोवियत संघ के साथ इतना नहीं।

शीत युद्ध के अंत ने आर्कटिक सैन्यीकरण को पिघलने का अनुभव करने की अनुमति दी क्योंकि अमेरिका और रूस अपने संबंधों को पुनर्निधार्रित करने लगे। राष्ट्रपति के निर्णय निर्देश / एनएससी -26 09 जून 1994 को जारी किया गया, "... आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों से संबंधित संयुक्त राज्य अमेरिका की नीति के कार्यान्वयन को निर्देशित करता है। (अमेरिका के) ... नीति इन दोनों अद्वितीय और नाजुक वातावरणों की रक्षा के महत्व को दर्शाती है, जिसमें क्षेत्रीय और वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों पर वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए उनकी क्षमता शामिल है। यह दोनों क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता और इन सहकारी अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में अमेरिकी नेतृत्व की भूमिका को भी पहचानता है[lxxv]।"

शीत युद्ध के बाद के माहौल ने रूस के साथ खुलेपन और सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने के साथ अमेरिकी आर्कटिक नीति में बदलाव की अनुमति दी। दस्तावेज में पर्यावरण संरक्षण विशेष रूप से समुद्री प्रदूषण पर एक साथ काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। यह इस तथ्य को इंगित करता है कि आर्कटिक प्रदूषण में रूस का असमान हिस्सा है और जबकि उनके पास इसे कम करने की विशेषज्ञता है, उनके पास वित्तीय संसाधनों की कमी है। अमेरिका ने प्रस्ताव दिया कि उसकी संबंधित एजेंसियों को रूसी समकक्षों के साथ संरक्षण और सतत विकास रणनीतियों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

फिर भी, इसने चेतावनी दी कि अमेरिका के पास सुरक्षा और रक्षा हित जारी हैं, और आर्कटिक में किसी भी हमले से खुद को बचाने की क्षमता बनाए रखने की आवश्यकता है।

9/11 के आतंकवादी हमलों के बाद रूस और अमेरिका के बीच सहयोग बढ़ने के साथ, यह आर्कटिक परिषद में अधिक सहकारी वातावरण में परिलक्षित हुआ। हालांकि,जैसे-जैसे संबंध दूर होते गए, उन्होंने आर्कटिक में भी संबंधों को प्रभावित किया, जिससे अमेरिका में नीतिगत परिवर्तन हुए।राष्ट्रीय सुरक्षा राष्ट्रपति निर्देश / एनएसपीडी - 66 और होमलैंड सुरक्षा राष्ट्रपति निर्देश / एचएसपीडी - 25 2009 के 25 ने कहा कि **"अमेरिका एक आर्कटिक राष्ट्र है, उस क्षेत्र में विविध और सम्मोहक हितों के साथ**[lxxvi]" (महत्व दिया गया) 1994 के निर्देश के विपरीत, 2009 के निर्देश में राष्ट्रीय सुरक्षा और मातृभूमि सुरक्षा हितों पर काफी जोर दिया गया था। इसमें कहा गया है, "अमेरिका के आर्कटिक क्षेत्र में व्यापक और मौलिक राष्ट्रीय सुरक्षा हित हैं और इन हितों की रक्षा के लिए स्वतंत्र रूप से या अन्य राज्यों के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार है[lxxvii]। इसमें कहा गया है कि अमेरिका प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के विकास, मिसाइल रक्षा, समुद्र और वायु सामरिक लिफ्ट क्षमताओं की तैनाती, रणनीतिक प्रतिरोध, समुद्री सुरक्षा और नेविगेशन और ओवर-फ्लाइट की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के माध्यम से इन हितों की रक्षा करेगा। अमेरिका ने आर्कटिक को अपनी शीर्ष प्राथमिकता के रूप में अंतर्राष्ट्रीय नेविगेशन में उपयोग के लिए समुद्र की स्वतंत्रता के साथ एक मुख्य रूप से समुद्री डोमेन के रूप में पहचाना। इन लक्ष्यों को राज्य सचिवों, रक्षा और मातृभूमि सुरक्षा और अन्य प्रासंगिक एजेंसियों के बीच घनिष्ठ सहयोग के माध्यम से प्राप्त किया जाना था। इसका एक संभावित कारण 2008 में रूस और जॉर्जिया के बीच संकट था।नाटो के अन्य सदस्यों के साथ अमेरिका ने संघर्ष विराम का आह्वान किया, रूस द्वारा अपनी सेना को आगे बढ़ने से रोकने का फैसला करने के बाद संकट हल हो गया। हालांकि, रूस ने युद्ध के बाद औपचारिक रूप से दक्षिण ओसेशिया और अब्खाज़िया को स्वतंत्र राज्यों के रूप में मान्यता दी थी, लेकिन कुछ अन्य देश ऐसा करने में उनके साथ शामिल हो गए हैं।

दिलचस्प बात यह है कि एनएसपीडी 66 और एचएसपीडी 25 दस्तावेजों में आर्कटिक में विस्तारित महाद्वीपीय शेल्फ और सीमा मुद्दों का भी उल्लेख किया गया है। कनाडा और अमेरिका के पास ब्यूफोर्ट सागर में एक अनसुलझी सीमा है। इसके विस्तारित महाद्वीपीय शेल्फ की कानूनी और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता यूएनसीएलओएस के सभी पक्षों के लिए उपलब्ध प्रक्रियाओं के माध्यम से होगी[lxxxvii]। यह इंगित करने की आवश्यकता है कि जबकि अमेरिका यूएनसीएलओएस को प्रथागत अंतरराष्ट्रीय कानूनों के संहिताकरण के रूप में मान्यता देता है, उसने इसकी पुष्टि नहीं की है। सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा अमेरिका के भीतर से बढ़ते कॉल हैं, जो महसूस करते हैं कि यूएनसीएलओएस के अनुसमर्थन से अमेरिका को रूस और चीन दोनों से बढ़ती चुनौतियों को बेहतर ढंग से संबोधित करने के साथ-साथ कनाडा के साथ अपने समुद्री सीमा विवाद को सुलझाने की अनुमति मिलेगी।

अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और सम्मेलनों पर जोर देने पर ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह आर्कटिक पर पहले के दस्तावेज में मौजूद नहीं था। यह शायद आर्कटिक समुद्र तल पर एक रूसी ध्वज के प्रतीकात्मक

रोपण के कारण था, जो मॉस्को का दावा है कि 2007 में अपने महाद्वीपीय शेल्फ से जुड़ा हुआ है। हालांकि, समुद्र तल पर ध्वज का रोपण अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अप्रासंगिक है, यह एक कठिन कार्य के रूप में मुद्दों को हल करने में कठिनाई का खुलासा करता है। जबकि रूस द्वारा ध्वज मिशन और इसके दावों को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा खारिज कर दिया गया है, जिसमें आर्कटिक परिषद के सदस्य भी शामिल हैं, इसने आर्कटिक में संप्रभुता के दावों की प्राप्ति का नेतृत्व किया। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आर्कटिक में अप्रयुक्त संसाधनों की काफी मात्रा के बारे में जागरूकता बढ़ जाती है। इसके अलावा, रूस ने भी अपनी आर्कटिक सेना का निर्माण करना शुरू कर दिया, जिससे अमेरिका की आर्कटिक रणनीति का पुनर्निर्देशन हुआ।

व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति 2010 के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में, आर्कटिक क्षेत्र 2013 के लिए राष्ट्रीय रणनीति ने आर्कटिक क्षेत्र में अमेरिकी सरकार की रणनीतिक प्राथमिकताओं को व्यक्त किया। रणनीति का उद्देश्य अमेरिका को न केवल पीछे हटने वाली बर्फ द्वारा प्रस्तुत अवसरों का प्रभावी ढंग से जवाब देना था, बल्कि नए आर्कटिक वातावरण से उभरने वाली चुनौतियों का भी प्रभावी ढंग से जवाब देना था। रणनीति दस्तावेज ने अमेरिका के लिए तीन प्राथमिकताओं को रेखांकित किया। *वे थे- "एक, अमेरिकी सुरक्षा हितों को आगे बढ़ाना, दो, जिम्मेदार आर्कटिक क्षेत्र के नेतृत्व का पीछा करना और तीन, अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना*[lxxix]। दस्तावेज ने स्वीकार किया कि उपरोक्त हासिल किया जाएगा क्योंकि अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय विचारों के दायरे में इस क्षेत्र में अपनी क्षमताओं और क्षमताओं को विकसित किया है और आर्कटिक पर्यावरण और संस्कृति की सुरक्षा के लिए सोचा है। क्षेत्र के लोगों को शामिल करने की आवश्यकता पर जोर उल्लेखनीय है। जलवायु परिवर्तन के मुख्य प्रभावों में से एक स्वदेशी लोगों की गतिविधियों पर होगा। बढ़ती हुई अनुभूति कि भूमि की स्वदेशी आबादी का अपने विकास में एक कहना है, ने क्षेत्र पर अतिव्यापी दावों को देखते हुए महत्व प्राप्त किया है।

राष्ट्रपति ओबामा और उनके प्रशासन ने आर्कटिक को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य से देखा। जवाब में उन्होंने नए प्रशासन पदों का निर्माण किया जैसे कि आर्कटिक क्षेत्र के लिए एक अमेरिकी विशेष प्रतिनिधि और आर्कटिक कार्यकारी संचालन समिति के कार्यकारी निदेशक। उन्हें अमेरिका की आर्कटिक परिषद की अध्यक्षता का प्रबंधन करना था और अलास्का राज्य के साथ अधिक संलग्न करते हुए अमेरिका के भीतर आर्कटिक मुद्दों पर अधिक सार्वजनिक दृश्यता लाने के लिए भी था। आर्कटिक क्षेत्र (2015) के लिए अपनी राष्ट्रीय रणनीति में प्रशासन ने आर्कटिक में बदलते पर्यावरण पर जोर दिया - प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ सुरक्षा वातावरण दोनों के संदर्भ में। 2013 में, चीन और भारत आर्कटिक परिषद में स्थायी पर्यवेक्षक बन गए। परिषद में चीन का प्रवेश राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के विकास के साथ हुआ और 2014 में रूस ने क्रीमिया पर सैन्य रूप से कब्जा कर लिया। व्लादिवोस्तोक, रूस के तट पर 2015 चीन-रूसी नौसैनिक अभ्यास अमेरिका द्वारा आर्कटिक परिषद की अध्यक्षता (2015-2017) संभालने के साथ मेल खाता है। एक मुखर रूस के इन विकास और चीन के उदय का उल्लेख ओबामा

प्रशासन की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति 2015 में किया गया था। इसने इस क्षेत्र में अमेरिकी हितों की पहचान की,

> "... अमेरिका की सुरक्षा के लिए प्रदान करना; संसाधनों और वाणिज्य के मुक्त प्रवाह की रक्षा; पर्यावरण की रक्षा करना; स्वदेशी समुदायों की जरूरतों को पूरा करना; और वैज्ञानिक अनुसंधान को सक्षम करना[lxxx]।
>
> इन हितों की रक्षा में, अमेरिका को बढ़ावा देना होगा, "... नेविगेशन की स्वतंत्रता और ओवर-फ्लाइट और इन स्वतंत्रताओं से संबंधित समुद्र और हवाई क्षेत्र के अन्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैध उपयोग; महासागरों पर सुरक्षा; सहयोगियों और भागीदारों के साथ मजबूत संबंध बनाए रखना; और बिना किसी जबरदस्ती के विवादों का शांतिपूर्ण समाधान[lxxxi]।

9 जून, 2020 को, ट्रम्प प्रशासन ने ध्रुवीय क्षेत्रों के लिए एक नई राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा रणनीति का अनावरण किया जिसका शीर्षक "आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों में अमेरिकी राष्ट्रीय हितों की रक्षा पर ज्ञापन" था। डीओडी की 2019 आर्कटिक रणनीति के साथ ज्ञापन ध्रुवीय मामलों में अमेरिका की निरंतर रुचि का संकेत था। ज्ञापन में ध्रुवीय क्षेत्रों में एक मजबूत उपस्थिति बनाए रखने के लिए तैयार क्षमता की कमी को स्वीकार किया गया। इसमें कहा गया है कि, "संयुक्त राज्य अमेरिका को ध्रुवीय सुरक्षा आइसब्रेकर के एक तैयार, सक्षम और उपलब्ध बेड़े की आवश्यकता है जो वित्तीय वर्ष 2029 तक परिचालन रूप से परीक्षण और पूरी तरह से तैनाती योग्य है। संयुक्त राज्य अमेरिका एक ध्रुवीय सुरक्षा आइसब्रेकिंग बेड़े अधिग्रहण कार्यक्रम को विकसित और निष्पादित करेगा जो आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों में हमारे (यूएस) राष्ट्रीय हितों का समर्थन करता है[lxxxii]। बिडेन प्रशासन एक सुरक्षा लेंस से आर्कटिक को देखना जारी रखने की संभावना है, लेकिन जलवायु परिवर्तन शमन और बहुपक्षीय सहयोग पर राष्ट्रपति बिडेन द्वारा तनाव को देखते हुए, यह संभावना है कि अमेरिका मछली पालन प्रबंधन, खोज और बचाव क्षमताओं, आपातकालीन आइसब्रेकिंग और पर्यावरणीय क्षति को कम करने जैसे क्षेत्रों में रूस सहित देशों के साथ सहयोग करेगा।

उपर्युक्त दस्तावेजों के अध्ययन के आधार पर, कोई भी संक्षेप में कह सकता है कि आर्कटिक क्षेत्र में अमेरिकी रुचि के काफी हद तक तीन मुख्य चालक हैं। सबसे महत्वपूर्ण में से एक सुरक्षा चिंताओं में से एक यह रूस की तुलना में है. अमेरिका और रूस के बीच शक्ति प्रतियोगिता, एक मुखर और सैन्यीकृत रूस के साथ, अमेरिका के लिए एक चुनौती होगी, क्योंकि इसकी अपनी सैन्य क्षमताएं बराबर से नीचे हैं। रूस के अलावा अमेरिका आर्कटिक क्षेत्र में चीन के बढ़ते हितों से भी सावधान है। चीन न केवल आर्कटिक को ध्रुवीय रेशम मार्ग के अपने विचार से जोड़ने की कोशिश कर रहा है, बल्कि समुद्र की बर्फ का लाभ उठाने के लिए बर्फ तोड़ने वाले भी बना रहा है। पानी के पार से मुद्दों के अलावा, अमेरिका कनाडा के साथ अपनी समुद्री सीमाओं को भी सुलझाना चाहेगा। कनाडा के अनुसार, 1825 की एंग्लो-रूसी संधि, भूमि और समुद्र दोनों पर 141 वीं डिग्री की मेरिडियन लाइन पर सीमा को चित्रित करती है; जबकि अमेरिका का दावा है कि यह

केवल एक भूमि सीमा है और सामान्य समुद्री सीमा परिसीमन तट से परे लागू होता है। नॉर्थवेस्ट पैसेज पर अपनी संप्रभुता को निर्णायक रूप से स्थापित करने के लिए कनाडा के प्रयासों को भी संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आसानी से स्वीकार नहीं किया गया है।

सुरक्षा चिंताओं से जुड़े आर्थिक चालक हैं। आर्कटिक के प्राकृतिक संसाधनों में खनिज संपदा, ऊर्जा संसाधन और जीवित संसाधन शामिल हैं जो बड़ी मात्रा में काटे जाते हैं। यूएस जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) के आकलन के अनुसार, आर्कटिक में अज्ञात तेल का लगभग 13 प्रतिशत (90 बिलियन बैरल) और अज्ञात प्राकृतिक गैस संसाधनों का 30 प्रतिशत है। हालांकि, इन संसाधनों की वाणिज्यिक व्यवहार्यता एक चरम वातावरण में निष्कर्षण में कठिनाई के कारण एक प्रश्न चिह्न बनी हुई है, राष्ट्रों को आशा है कि भविष्य में यह लागत प्रभावी साबित होगा[lxxxiii]। अन्य संसाधन स्तनधारियों और मछलियों की बड़े पैमाने पर कटाई है, जो ग्लोबल वार्मिंग के साथ बढ़ने की आशा है। "अमेरिका के मछली स्टॉक का 50 प्रतिशत से अधिक अलास्का से राष्ट्र के ईईजेड से आता है। इसके अलावा, आर्कटिक क्षेत्र के माध्यम से कार्गो का ट्रांस-शिपमेंट बढ़ रहा है[lxxxiv]। वैश्विक आहार में बदलाव के साथ, समुद्री भोजन की ओर अधिक झुकाव, मत्स्य उद्योग एक बढ़ावा देने पर विचार कर रहा है। आर्कटिक में मछली पकड़ने से अमेरिका को हर साल लगभग 3 मिलियन टन मछली मिलती है, जिसका मूल्य लगभग 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। इससे जुड़ा हुआ अमेरिकी आर्कटिक रणनीति का महत्वपूर्ण पहलू है जो पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता पर केंद्रित है।

जबकि आर्कटिक पर्यावरण में परिवर्तन राजस्व के नए मार्गों को बढ़ावा दे रहे हैं, वे न केवल आर्कटिक में हानिकारक परिवर्तनों से जुड़े हुए हैं, बल्कि वैश्विक जलवायु और मौसम परिवर्तन भी हैं। पर्यावरण की रक्षा करने और अनियमित मछली पकड़ने को रोकने के लिए, कनाडा, चीन, फारो द्वीप समूह और ग्रीनलैंड के संबंध में डेनमार्क के साम्राज्य, यूरोपीय संघ, आइसलैंड, जापान, कोरिया गणराज्य, नॉर्वे के साम्राज्य, रूसी संघ और अमेरिका ने मध्य आर्कटिक महासागर (2018) में अनियमित मछली पकड़ने को रोकने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं[lxxxv]। आर्कटिक के प्रति अमेरिकी नीति इन कारकों के साथ-साथ महत्वपूर्ण ऊर्जा, खनिज और मत्स्य संसाधन प्रदान करने में अलास्का की महत्वपूर्ण घरेलू आर्थिक भूमिका से प्रेरित है।

[iii] (ख) आर्कटिक में रक्षा क्षमताएं

अलास्का कई कारणों से अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। अमेरिका ने एशिया से संभावित मिसाइल प्रक्षेपणों को रोकने के प्रयास में अपनी जमीन-आधारित मिसाइल प्रणालियों को रखा है और इसके पास ऑपरेटिंग बेस हैं जहां विमान पानी के पार मिशन के लिए ईंधन भर सकते हैं। अलास्का भी अमेरिका से एशिया के लिए महान सर्कल मार्ग पर है। अलास्का में अमेरिकी बलों की प्रशांत रिम में तेजी से तैनात करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए, यह क्षेत्र एक बहुत ही महत्वपूर्ण फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस या स्टॉपओवर पॉइंट बन जाता है।

अमेरिकी रक्षा विभाग (डीओडी) ने भी आर्कटिक में अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए अपनी रणनीति को रेखांकित किया। यूएस डीओडी ने अपनी 2013 आर्कटिक रणनीति में कहा कि, आर्कटिक में अमेरिकी सैन्य उद्देश्यों ने व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा हितों का समर्थन किया। "यह आर्कटिक क्षेत्र में सैन्य गतिविधि को आकार देने के लिए डीओडी के हित में था ताकि संघर्ष से बचा जा सके, जबकि आने वाले वर्षों में आर्कटिक में बढ़ती पहुंच और गतिविधि की प्रत्याशा में एक कठोर, दूरस्थ वातावरण में बलों को सुरक्षित रूप से संचालित करने और बनाए रखने की अपनी क्षमता में सुधार किया जा सके"[lxxxvi]।

2019 आर्कटिक रणनीति 2016 डीओडी आर्कटिक रणनीति, 2017 राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति से इनपुट ले रही है और 2018 राष्ट्रीय रक्षा रणनीति (एनडीएस) की प्राथमिकताओं में लंगर डालती है और दीर्घकालिक अमेरिकी सुरक्षा और समृद्धि के लिए प्रमुख चुनौती के रूप में चीन और रूस के साथ प्रतिस्पर्धा पर अपना ध्यान केंद्रित करती है। यह रेखांकित करता है कि, "आर्कटिक के लिए डीओडी का वांछित अंत-राज्य एक सुरक्षित और स्थिर क्षेत्र है जहां अमेरिकी राष्ट्रीय हितों की रक्षा की जाती है, अमेरिकी मातृभूमि की रक्षा की जाती है, और राष्ट्र साझा चुनौतियों से निपटने के लिए सहकारी रूप से काम करते हैं"[lxxxvii]। यह वांछित आर्कटिक अंत राज्य का समर्थन करने के तीन तरीकों की पहचान करता है - आर्कटिक जागरूकता का निर्माण; आर्कटिक संचालन को बढ़ाना; और आर्कटिक में नियम-आधारित आदेश को मजबूत करना।

आर्कटिक अमेरिका के लिए अपने समुद्री सुरक्षा अभियानों का संचालन करने के लिए महत्वपूर्ण है, जबकि अलास्का में अपने सैन्य ठिकानों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और अमेरिका 'क्षेत्र में अपने हित की रक्षा में यदि आवश्यक हो तो एकतरफा कार्रवाई करने के लिए तैयार और तैयार होगा।

आर्कटिक क्षेत्र में अमेरिकी रक्षा हितों को कई समूहों में विभाजित किया जा सकता है। उनमें से प्राथमिक इसके सैन्य-रणनीतिक हित हैं। इसमें इसकी रणनीतिक प्रतिरोध, एनओआरएडी मिसाइल रक्षा और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, समुद्री उपस्थिति और समुद्री सुरक्षा संचालन के साथ समुद्र और वायु परिसंपत्तियों की तैनाती और नेविगेशन और ओवर-फ्लाइट की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना शामिल था। दूसरे, अमेरिका के पास आतंकवादी हमलों या अन्य आपराधिक कृत्यों को रोकने में एक राष्ट्रीय सुरक्षा हित है जो आर्कटिक क्षेत्र में अपनी भेद्यता को बढ़ाते हैं, जबकि इसकी समुद्री शक्ति को मजबूत करते हैं। तीसरा, अमेरिका के रक्षा हित अनजाने में उसके राजनीतिक और आर्थिक हितों से जुड़े हुए हैं।

आर्कटिक में अपने अधिकार क्षेत्र की सीमाओं के भीतर रहते हुए, अमेरिका अपने संप्रभु अधिकारों की रक्षा करना चाहता है और सन्निहित जल पर "उचित नियंत्रण" का अभ्यास करना चाहता है; उत्तरी सागर मार्ग सहित पूरे आर्कटिक में ट्रांस-आर्कटिक ओवर-फ्लाइट्स और नेविगेशन की स्वतंत्रता की स्वतंत्रता को बनाए रखना। ये इसकी शीर्ष राष्ट्रीय प्राथमिकताएं रही हैं।

> 12 जनवरी, 2017 को, पूर्व रक्षा सचिव जेम्स मैटिस ने कहा कि "[टी] वह आर्कटिक प्रमुख रणनीतिक क्षेत्र है। रूस वहां अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए आक्रामक कदम उठा रहा है। मैं

आर्कटिक के लिए एक एकीकृत रणनीति के विकास को प्राथमिकता दूंगा। मेरा मानना है कि हमारे हितों और आर्कटिक की सुरक्षा को इस क्षेत्र पर रक्षा विभाग के फोकस को बढ़ाने से लाभ होगा[lxxxviii]।

इस क्षेत्र में अपने रक्षा हितों को स्पष्ट करने के बावजूद, एक पाता है कि आर्कटिक के लिए अमेरिकी रणनीति के भीतर कठिन सुरक्षा पहलू सीमित है। जैसा कि रूस अपने सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण करता है, आर्कटिक में बढ़ती चुनौतियों का सामना करने के लिए अमेरिकी बलों की तैयारियों पर अमेरिकी कांग्रेस और सुरक्षा तंत्र में सवाल उठाए जा रहे हैं, विशेष रूप से सैन्य क्षेत्र में। सीमित निवेश के वर्षों का मतलब है कि अमेरिकी तटरक्षक, अमेरिकी आर्कटिक की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार प्राथमिक एजेंसी पतली संसाधनहै और पुरानी क्षमताओं के साथ एक आधुनिक युद्ध लड़ रही है।

2013 अमेरिकी तटरक्षक आर्कटिक रणनीति ने कहा कि, "इसके लिए एजेंसी की आवश्यकता होगी ... निगरानी, संग्रह और जानकारी के आदान-प्रदान और आकस्मिकताओं का जवाब देने के लिए महत्वपूर्ण तैयारी के लिए बुनियादी ढांचे का विकास करना"[lxxxix]। ... तटरक्षक बल को संसाधन सीमित बजट जलवायु में तत्परता चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उम्र बढ़ने की सतह और विमानन परिसंपत्तियों, साथ ही साथ प्राचीन किनारे- और सूचना प्रौद्योगिकी बुनियादी ढांचे, हमारी परिचालन तत्परता को चुनौती देते हैं। जबकि हम आवश्यक परिसंपत्तियों को पुनर्पूंजीकृत करने के लिए काम कर रहे हैं, हमें उन्हें बनाए रखने और संचालित करने के लिए संसाधनों की भी आवश्यकता है"[xc]। यूएस कोस्ट गार्ड्स आर्कटिक स्ट्रैटेजिक आउटलुक 2019 "दुनिया भर में नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए रूस और चीन की लगातार चुनौतियां आर्कटिक क्षेत्र की निरंतर शांतिपूर्ण स्थिरता के समान उल्लंघन की चिंता का कारण बनती हैं"[xci]। हालांकि,यह एक संसाधन की कमी का सामना करना जारी है। "प्रभावी क्षमता के लिए पर्याप्त भारी आइसब्रेकिंग जहाजों, विश्वसनीय उच्च-अक्षांश संचार और व्यापक समुद्री डोमेन जागरूकता की आवश्यकता होती है। आर्कटिक में संकटों का जवाब देने के लिए, हमारे राष्ट्र (अमेरिका) को भी इस क्षेत्र में पर्याप्त कर्मियों, विमानन और रसद संसाधनों को इकट्ठा करना चाहिए। (महत्व दिया गया) तटरक्षक बल अमेरिकी ध्रुवीय सक्षम बेड़े का एकमात्र प्रदाता और ऑपरेटर है, लेकिन वर्तमान में उच्च अक्षांशों में पहुंच सुनिश्चित करने की क्षमता या क्षमता नहीं है। अंतर को बंद करने के लिए ध्रुवीय सुरक्षा कटर सहित ध्रुवीय संचालन के लिए क्षमताओं और क्षमताओं में लगातार निवेश की आवश्यकता होती है."[xcii]।

अमेरिकी तटरक्षक बल वर्तमान में एक भारी ध्रुवीय आइसब्रेकर, पोलर स्टार और एक मध्यम ध्रुवीय आइसब्रेकर, हीली है। दूसरा भारी ध्रुवीय बर्फ ब्रेकर - ध्रुवीय सागर गैर-परिचालन है और इसका उपयोग ध्रुवीय तारे के लिए स्पेयर पार्ट्स प्रदान करने के लिए किया जाता है। दोनों जहाजों ने क्रमशः 1976 और 1978 में सेवा में प्रवेश किया, और अब अपने मूल रूप से इच्छित 30 साल के सेवा जीवन से परे हैं। अमेरिकी तटरक्षक बल वर्तमान में एक भारी ध्रुवीय आइसब्रेकर, पोलर स्टार और एक मध्यम ध्रुवीय आइसब्रेकर, हीली है। दूसरा भारी ध्रुवीय बर्फ ब्रेकर - ध्रुवीय सागर गैर-परिचालन है और इसका उपयोग ध्रुवीय तारे के लिए स्पेयर पार्ट्स प्रदान करने के लिए किया जाता है। दोनों जहाजों ने क्रमशः 1976 और 1978 में सेवा में

प्रवेश किया, और अब अपने मूल रूप से इच्छित 30 साल के सेवा जीवन से परे हैं"[xciii]। 3+3 सूत्र से कम, तटरक्षक बल को परिचालन क्षमता बनाए रखने के लिए दो भारी बर्फ कटर की आवश्यकता थी। अमेरिकी कांग्रेस ने वित्तीय वर्ष 2019 के लिए खरीद[xciv] वित्त पोषण में लगभग 1.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर की लागत के लिए नए ध्रुवीय आइसब्रेकर प्राप्त करने के लिए तटरक्षक के कार्यक्रम को मंजूरी दे दी। क्षमताओं और क्षमताओं की आवश्यकता, दोनों परिसंपत्तियों और लोगों, सुसज्जित और प्रशिक्षित और इस कठोर वातावरण में संचालित करने और नेतृत्व करने के लिए आर्कटिक होमलैंड सुरक्षा के लिए डीएचएस के 2021 रणनीतिक दृष्टिकोण द्वारा स्वीकार किया जाता है। दस्तावेज़ मानव रहित प्रणालियों जैसी तकनीकी क्षमताओं को भी विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देता है "... एक कुशल और लागत प्रभावी तरीके से कठोर इलाके में संदिग्ध और गैर-धमकी देने वाली गतिविधियों को समझना, ट्रैक करना और मॉनिटर करना, संदिग्ध और गैर-धमकी देने वाली गतिविधियों को समझना।

एकमात्र अमेरिकी सेवा के रूप में जो सैन्य और नागरिक अधिकारियों दोनों को जोड़ती है, अमेरिकी तटरक्षक बल को दोहरी क्षमता का निर्माण करना चाहिए। पहला संघीय, राज्य और स्थानीय अधिकारियों के बीच सहयोग का निर्माण करना है ताकि बढ़ती वाणिज्यिक गतिविधियों, संसाधन निष्कर्षण और पर्यटन से उत्पन्न मुद्दों को संबोधित किया जा सके। दूसरा नौसेना के अभियानों का समर्थन करने के लिए खोज और बचाव जैसे सेवा आधारित मिशनों की मांगों को पूरा करने के लिए क्षमता और क्षमता का निर्माण करना है। तीनों सेनाओं के बीच घनिष्ठ सहयोग के अलावा, अमेरिकी तटरक्षक बल आर्कटिक देशों के अपने समकक्षों के साथ साझेदारी करता है, और अंतर्राष्ट्रीय कानून को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए आर्कटिक में हितों के साथ सहयोगियों और भागीदारों के साथ साझेदारी करता है कि यह क्षेत्र संघर्ष मुक्त है। एकमात्र अमेरिकी सेवा के रूप में जो सैन्य और नागरिक अधिकारियों दोनों को जोड़ती है, अमेरिकी तटरक्षक बल को दोहरी क्षमता का निर्माण करना चाहिए। पहला संघीय, राज्य और स्थानीय अधिकारियों के बीच सहयोग का निर्माण करना है ताकि बढ़ती वाणिज्यिक गतिविधियों, संसाधन निष्कर्षण और पर्यटन से उत्पन्न मुद्दों को संबोधित किया जा सके। दूसरा नौसेना के अभियानों का समर्थन करने के लिए खोज और बचाव जैसे सेवा आधारित मिशनों की मांगों को पूरा करने के लिए क्षमता और क्षमता का निर्माण करना है। तीनों सेनाओं के बीच घनिष्ठ सहयोग के अलावा, अमेरिकी तटरक्षक बल आर्कटिक देशों के अपने समकक्षों के साथ साझेदारी करता है, और अंतर्राष्ट्रीय कानून को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए आर्कटिक में हितों के साथ सहयोगियों और भागीदारों के साथ साझेदारी करता है कि यह क्षेत्र संघर्ष मुक्त है।

अमेरिकी नौसेना ने भी आर्कटिक पर ध्यान केंद्रित किया है। 2011 में, अमेरिकी नौसेना ने आर्कटिक की जिम्मेदारी को तीन कमांड से दो में स्थानांतरित कर दिया, यूएस पैसिफिक कमांड से [पीएसीओएम अब यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड यूएस इंडोपाकॉम है] केवल यूएस नॉर्दर्न कमांड (नॉर्थकॉम) और यूएस यूरोपियन कमांड के लिए, जिसमें यूएस नॉर्थकॉम लीड में है। 2014 में जारी 2014 से 2030 के लिए अमेरिकी नौसेना के आर्कटिक रोडमैप ने कहा कि "... (अमेरिकी नौसेना) संप्रभुता की रक्षा करने, समुद्रों की स्वतंत्रता

सुनिश्चित करने और आर्कटिक क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने और संघर्ष को रोकने के लिए मातृभूमि की रक्षा करने के लिए संयुक्त बलों, इंटरएजेंसी हितधारकों और सहयोगियों और भागीदारों के साथ मिलकर कई प्रमुख मिशनों को निष्पादित करेगी"[xcv]। यह इस तथ्य को भी इंगित करता है कि, "नौसेना की अद्वितीय क्षमताएं इसे संकटों का जवाब देने, प्रतिरोध में योगदान करने और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ाने के लिए कई बिखरे हुए स्थानों से बलों को तेजी से और प्रभावी ढंग से तैनात करने और बनाए रखने की अनुमति देती हैं"[xcvi]।

दस्तावेज़ आगे सूचीबद्ध करता है कि निकट-अवधि, मध्यावधि और दूर-अवधि की चुनौतियों को संबोधित करने के अपने प्रयासों में; यह क्षेत्र में अपनी क्षमताओं और उपस्थिति में सुधार करेगा। निकट-अवधि (2014-2020) में, यह अपनी समुद्र के नीचे और हवाई परिसंपत्तियों को बढ़ाएगा। दस्तावेज में कहा गया है कि "... सतह जहाज संचालन निकट-अवधि में खुले पानी के संचालन तक सीमित होगा जो नौसेना मिशनों का संचालन करने के लिए बर्फ को मजबूत सैन्य सीलिफ्ट कमांड (एमएससी) जहाजों को नियोजित करेगा। अमेरिकी नौसेना भी आर्कटिक परिस्थितियों में काम करने के लिए प्रशिक्षित कर्मियों की संख्या बढ़ाने का इरादा रखती है। "चल रहे अभ्यासों के माध्यम से, जैसे कि बर्फ व्यायाम (आईसीईएक्स) और वैज्ञानिक बर्फ अभियान (एससीआईसीईएक्स) 37 अनुसंधान, और नौसेना पनडुब्बियों, विमान और सतह के जहाजों द्वारा क्षेत्र के माध्यम से पारगमन, नौसेना विकसित ऑपरेटिंग वातावरण के बारे में अधिक जानना जारी रखेगी"[xcvii]।

अमेरिकी नौसेना समझ गई है कि उसे आर्कटिक क्षेत्र में अपने संचालन को फिर से परिभाषित करना होगा क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग समुद्री युद्ध की योजना बनाने के तरीके को बदल रही है। उदाहरण के लिए, आर्कटिक समुद्री बर्फ अब भविष्य में परमाणु पनडुब्बियों को छिपाने के लिए उपलब्ध नहीं होगा। नौसेना ने नेविगेशन की स्वतंत्रता को बनाए रखने के साथ-साथ खोज और बचाव और आपदा प्रतिक्रिया मिशनों को प्राथमिक जोखिमों के रूप में पहचाना है। सुदूर अवधि में (2030-2040), इसमें कम बर्फ के आवरण की परिकल्पना की गई है जिसके लिए अधिक समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता होगी और राष्ट्रीय सुरक्षा लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सतह, उप-सतह और वायु क्षमताओं की आवश्यकता होगी। अमेरिकी नौसेना और तटरक्षक रणनीति एक पावती की ओर इशारा करती है कि उन्हें बड़े बदलते सुरक्षा वातावरण के हिस्से के रूप में इस थिएटर में चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर क्षमताओं में सुधार करना चाहिए।

जबकि अमेरिकी तटरक्षक बल और अमेरिकी नौसेना पानी पर चुनौतियों को संबोधित करते हैं, नाटो और एनओआरएडी आर्कटिक में उत्पन्न होने वाले खतरों से बहुत आवश्यक महाद्वीपीय सुरक्षा प्रदान करते हैं। नाटो के लिए, आर्कटिक महत्वपूर्ण है और यह इस क्षेत्र में रूसी सेना की बढ़ती उपस्थिति के बारे में चिंतित है। नाटो नौसेना की क्षमताओं में अधिक निवेश करके अपनी समुद्री मुद्रा को मजबूत कर रहा है और वर्जीनिया के नॉरफ़ॉक में एक मुख्यालय के साथ एक नया अटलांटिक कमांड भी स्थापित किया है, और यह

आर्कटिक में कुछ चुनौतियों को भी संबोधित करेगा। अक्टूबर 2018 में, नाटो ने शीत युद्ध के बाद से अपना सबसे बड़ा आर्कटिक सैन्य अभ्यास आयोजित किया। नामित ट्राइडेंट जंक्शन, इस अभ्यास में 31 देशों के 50,000 से अधिक सेवा सदस्य शामिल थे। परिचालन उपस्थिति के लिए प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते हुए, कनाडा, डेनमार्क और नॉर्वे ने राष्ट्रीय या मातृभूमि सुरक्षा मिशनों के साथ आरोपित बर्फ-सक्षम गश्ती जहाजों में रणनीतिक निवेश किया है। "जबकि अमेरिका आर्कटिक संगठनों की एक विस्तृत श्रृंखला में के लिए प्रतिबद्ध है, यह एकमात्र आर्कटिक राज्य है जिसने बर्फ-सक्षम सतह समुद्री सुरक्षा परिसंपत्तियों में समान निवेश नहीं किया है। यह तटरक्षक बल और राष्ट्र की क्षमता को सीमित करता है, जो संप्रभुता को विश्वसनीय रूप से बनाए रखने या आर्कटिक में आकस्मिकताओं का जवाब देने के लिए है। यह सहयोगियों और साझेदार राष्ट्रों के लिए पसंद के भागीदार के रूप में अमेरिका की स्थिति को भी कम करता है"[xcviii]।

अमेरिका और कनाडा की उत्तरी सीमाओं के साथ रूसी और चीनी हित के साथ आर्कटिक का उद्घाटन यूएस नॉर्थकॉम और नोराड में शीर्ष अधिकारी के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। अमेरिका के लिए चिंता का केंद्र क्षेत्रों में से एक अलास्का है जहां अमेरिकी वायु सेना ने अपनी सीमाओं पर रूसी विमानों को रोक दिया है। एनओआरएडी के भीतर, कनाडा और अमेरिका ने उत्तरी चेतावनी प्रणाली के लिए एक प्रतिस्थापन की योजना बनाना शुरू कर दिया है। इसके 2030 तक पूरा होने की संभावना है। इसमें महाद्वीप के शीर्ष पर वायु रक्षा रडार का एक नेटवर्क होगा। परियोजना संयुक्त रूप से वित्त पोषित और एनओआरएडी के माध्यम से संचालित है, हालांकि, यह मुख्य रूप से कनाडा में स्थित होने जा रही है। प्रणाली का नवीकरण एक लगातार शीत युद्ध पुनरुद्धारवाद के संदर्भ में आता है जो राष्ट्रीय रक्षा और भू-रणनीतिक प्रतियोगिता के साथ एक पूर्वाग्रह को बढ़ाता है[xcix]। सिस्टम की प्राथमिक रणनीतिक भूमिका, अतीत की तरह, लंबी दूरी के रूसी सैन्य विमानों को ट्रैक करना होगा। रणनीतिक स्थिरता लाने के अलावा, यह महसूस किया गया था कि भौतिक जलवायु में परिवर्तनों का प्रभावी ढंग से जवाब देने और सुरक्षा और सुरक्षा कारणों से डोमेन जागरूकता बढ़ाने के लिए एक बेहतर प्रणाली की आवश्यकता है। वाणिज्यिक और सैन्य जहाजों दोनों द्वारा आर्कटिक में बढ़ती पहुंच और आंदोलन के साथ, देशों ने राष्ट्रीय रक्षा, सार्वजनिक सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरणीय सुरक्षा का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढांचे को प्रभावित करने की आवश्यकता महसूस की है।

[iii] (ग) आर्कटिक में अमेरिका के लिए भविष्य की चुनौतियां

आर्कटिक का पर्यावरण अमेरिका के लिए एक चुनौती है। जलवायु परिवर्तन के कारण आर्कटिक में बदलाव के रूप में, इसका लोगों, अर्थशास्त्र और राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव पड़ेगा। जैसा कि अमेरिका आर्कटिक की बेहतर समझ बनाता है, इसे भविष्य के लिए कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना होगा।

अमेरिका के लिए एक बड़ी चुनौती इस क्षेत्र में भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा होगी। जैसा कि राष्ट्रीय सुरक्षा अन्य देशों की आर्कटिक रणनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आती है, यह आम सहमति के निर्माण

के दृष्टिकोण को ढंक सकती है जो आज तक आर्कटिक की तुलना में पालन किया गया है। आर्कटिक के बढ़ते सैन्यीकरण के साथ और 'आर्कटिक स्थितियों के लिए प्रशिक्षण और इंटरऑपरेबिलिटी' के लिए आयोजित किए जा रहे अभ्यासों के साथ तनाव और अविश्वास बढ़ने की संभावना है। अमेरिका के लिए, रूस सबसे प्रमुख चुनौती बन गया है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है। क्षेत्र के मामले में सबसे बड़े राज्य के रूप में, रूस आर्कटिक भूगोल पर हावी है और तदनुसार सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के विकास पर हावी है। एक आर्कटिक राज्य के रूप में, रूस के पास नेविगेशन सुरक्षा, खोज और बचाव और पर्यावरण संरक्षण सहित इस क्षेत्र में वैध संप्रभु हित हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए एक बढ़ी हुई उपस्थिति की भी आवश्यकता है कि यह रडार कवरेज और आपातकालीन सेवाओं के माध्यम से क्षेत्र में अन्य जहाजों का मार्गदर्शन कर सके।

हालांकि,अमेरिका के लिए प्रश्न यह है कि क्या रूस इस क्षेत्र में रूसी प्रभाव का विस्तार करने के उद्देश्य से अन्य देशों को मजबूर करने के लिए इस शक्ति का उपयोग करने के लिए तैयार होगा। यह डर इस तथ्य से बढ़ जाता है कि अमेरिकी तटरक्षक और नौसेना कम सुसज्जित हैं, जबकि रूस अपने आइसब्रेकर बेड़े में सुधार करना जारी रखता है, जो पहले से ही दुनिया का सबसे बड़ा है, और नवीनतम रक्षा प्रौद्योगिकी के साथ अपने नौसैनिक जहाजों का आधुनिकीकरण करता है। "रूस अन्य आर्कटिक क्षमताओं और बुनियादी ढांचे का पुनर्निर्माण और विस्तार कर रहा है, जिसमें हवाई अड्डों, बंदरगाहों, हथियार प्रणालियों, सैनिकों की तैनाती, डोमेन जागरूकता उपकरण, खोज और बचाव संसाधन, वाणिज्यिक केंद्र और फ्लोटिंग परमाणु ऊर्जा संयंत्र शामिल हैं। एक रणनीतिक प्रतियोगी के रूप में, अमेरिका को रूस के कार्यों और अपनी क्षमताओं के संभावित दोहरे उपयोग पर ध्यान देना चाहिए। बाहरी शक्तियों से किसी भी चुनौती का मुकाबला करने के लिए इसे क्षेत्र में तेजी से अपनी सेनाओं का निर्माण करने की भी आवश्यकता है। रूस और अमेरिका को बहुपक्षीय ढांचे के भीतर कुछ सहयोग बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए ताकि न केवल तनाव को फैलाया जा सके, बल्कि स्थापित अंतरराष्ट्रीय नियमों और राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान का निर्माण भी किया जा सके"[c]।

आर्कटिक क्षेत्र में अमेरिका के लिए एक और भू-रणनीतिक चुनौती यहां चीन की बढ़ती रुचि है। चीन, एक गैर-आर्कटिक राज्य, ने अपनी रणनीति में कहा है कि यह एक 'निकट आर्कटिक राष्ट्र' है जो महाद्वीपीय एशिया से आर्कटिक के लिए निकटतम राष्ट्र है। चीन आर्कटिक के उद्घाटन को उत्तरी समुद्री मार्ग के माध्यम से यूरोप से अपने कनेक्शन के लिए एक रणनीतिक लाभ के रूप में देखता है। यह यह भी सुनिश्चित करता है कि चीन अपने व्यापार और वाणिज्य के लिए हिंद महासागर के समुद्री मार्गों पर निर्भर न रहे, ऐसे मार्ग जिनके रणनीतिक बिंदुओं पर अमेरिकी सैन्य अड्डे हैं। चीन ने लगातार पूर्वी और दक्षिण चीन सागर में अंतरराष्ट्रीय कानून को चुनौती दी है, कृत्रिम द्वीपों का निर्माण किया है और उन क्षेत्रों का दावा किया है जो उसके ऐतिहासिक रिकॉर्ड के आधार पर विवादित हैं। अंतरराष्ट्रीय कानून और विवाद निपटान तंत्र की इस अनदेखी ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका के लिए चिंता पैदा कर दी है।

अमेरिकी चिंता यह है कि आर्कटिक चीन के लिए महत्व प्राप्त करने के साथ, यह धीरे-धीरे इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय कानून की उपेक्षा कर सकता है जो आर्कटिक में अमेरिकी आर्थिक और वैज्ञानिक उपस्थिति को बाधित करेगा। "हाल के वर्षों में, चीन बंदरगाहों, समुद्र के नीचे केबलों और हवाई अड्डों को शामिल करने के लिए आर्कटिक बुनियादी ढांचे की गतिविधियों की एक श्रृंखला के साथ अपनी ध्रुवीय सिल्क रोड योजना का पीछा कर रहा है। इन योजनाओं को एक दूसरे बहु-मिशन बर्फ-सक्षम जहाज के निर्माण द्वारा समर्थित किया जाता है, यह घोषणा कि यह एक परमाणु संचालित आइसब्रेकर का निर्माण करेगा, आर्कटिक में अनुसंधान जहाजों की वार्षिक तैनाती, और कमजोर समुदायों में निवेश। अपने प्रभाव का विस्तार करने के चीन के प्रयास आर्कटिक में अमेरिकी पहुंच और नेविगेशन की स्वतंत्रता को बाधित कर सकते हैं क्योंकि दक्षिण चीन सागर तक अमेरिकी पहुंच को बाधित करने के लिए इसी तरह के प्रयास किए गए हैं."[ci]।

कनाडा के साथ आर्कटिक में क्षेत्रीय विवादों को हल करने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप, बर्फ के नीचे दफन ऊर्जा संसाधन जो पहले अनुपलब्ध थे, अब सुलभ हो रहे हैं। इसने आर्कटिक (और कई गैर-आर्कटिक) राज्यों द्वारा एक हाथापाई शुरू कर दी है ताकि वे जितना संभव हो सके उतना क्षेत्र पर अपना दावा रखने के लिए उनके लिए उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय कानूनी शासनों का उपयोग कर सकें। अमेरिका ने यूएनसीएलओएस की पुष्टि नहीं की है, जो एक संधि है जो आर्कटिक को नियंत्रित करती है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि जबकि अंटार्कटिका एक विशिष्ट संधि द्वारा शासित एक भूभाग है, आर्कटिक एक महासागर बेसिन है और इस प्रकार समुद्री डोमेन का भारी हिस्सा है जो विशेष रूप से नहीं माना जाता है। कुछ वैज्ञानिक आर्कटिक को आर्कटिक ट्री-लाइन के उत्तर में एक क्षेत्र के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें भूमि डोमेन भी शामिल है। जैसा कि विभिन्न देशों ने आर्कटिक समुद्र तल पर दावा करना शुरू कर दिया है, शासन यूएनसीएलओएस के तहत आधारित परस्पर विरोधी दावों को हल करेगा। यूएनसीएलओएस में गैर-भागीदारी का मतलब यह होगा कि अमेरिका द्वारा किया गया कोई भी दावा प्रकृति में एकतरफा होगा और यह समुद्रों में चीन के दावों के समान होगा जो इसे घेरता है। यह अमेरिका को भविष्य में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी एकतरफा पदों का विरोध करने के लिए बहुत कम आधार के साथ छोड़ देगा।

इन भू-रणनीतिक बाधाओं के अलावा, अमेरिका को इस क्षेत्र में चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है जैसे कि आर्कटिक में भविष्य की ऊर्जा खोज के लिए अपने बुनियादी ढांचे को विकसित करना। इसे आर्कटिक में जीवाश्म ईंधन निष्कर्षण से जुड़े जोखिम के लिए व्यापार-बंद की आवश्यकता है, जो उच्च बना हुआ है। फिलहाल, बिडेन प्रशासन ने अलास्का के आर्कटिक नेशनल वाइल्डलाइफ रिफ्यूज में तेल और गैस के पट्टों को पर्यावरणीय समीक्षा लंबित रहने तक निलंबित कर दिया है। यह कदम जीवाश्म ईंधन और खनिज विकास का विस्तार करने के लिए शरण में तेल पट्टे बेचने के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के फैसले को उलट देता है। पर्यावरण की लागत के अलावा, नीति निर्माताओं को ड्रिलिंग की लागत से भी जूझना होगा और तेल रिसाव पर तेजी से प्रतिक्रिया देने के लिए एक रणनीति बनाने की आवश्यकता होती है। उन

नीतियों को देखते हुए निकाले जाने वाले तेल की वाणिज्यिक व्यवहार्यता पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं जो राष्ट्रों द्वारा अपने नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विस्तार करने के लिए अपनाई जा रही हैं।

अमेरिका को बुनियादी ढांचे का निर्माण करने और क्षेत्र में वाणिज्यिक शिपिंग की बढ़ती गतिविधियों का जवाब देने की आवश्यकता है। अमेरिकी आर्कटिक तटों के साथ पर्याप्त बुनियादी ढांचे के संसाधनों की कमी इस बढ़े हुए यातायात की सेवा के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कुल मिलाकर आर्थिक गतिविधियां जैसे ऊर्जा संसाधनों का निष्कर्षण, अधिक शिपिंग ट्रैफ़िक, और मछली पकड़ने के अवसरों में वृद्धि समुद्र में अधिक दुर्घटनाओं की संभावना को जोड़ती है। फिलहाल, सुरक्षित नेविगेशन सुनिश्चित करने, आपातकालीन स्थिति में खोज और बचाव मिशन शुरू करने, या यदि आवश्यक हो तो प्रदूषण प्रतिक्रिया का समन्वय करने के लिए अमेरिका के भीतर अपर्याप्त बुनियादी ढांचा है। यह संकट में जहाजों के लिए आर्कटिक में एक अमेरिकी बंदरगाह की कमी और यहां अमेरिकी तटरक्षक बल की कोई स्थायी उपस्थिति में स्पष्ट है। किसी भी चुनौती की स्थिति में अमेरिका के आर्कटिक बुनियादी ढांचे और तत्परता का गंभीर परीक्षण किया जाएगा।

[IV] आम चुनौती: आर्कटिक में चीन

चीन आर्कटिक क्षेत्र में रूस और अमेरिका दोनों के लिए एक साझा चुनौती के रूप में उभरा है। जबकि चीन सैन्य रूप से आर्कटिक में शामिल नहीं है, उसने अपने आर्थिक हित को स्पष्ट कर दिया है। रूस और अमेरिका दोनों चीन से सावधान हैं जहां आर्कटिक का संबंध है।

चीन और आर्कटिक के बीच सबसे कम दूरी 900 मील है[cii], जिसने चीन द्वारा इस क्षेत्र में अपने दावों के सूक्ष्म दावों को जन्म दिया है, जो खुद को 'निकट आर्कटिक' राष्ट्र के रूप में संदर्भित करता है[ciii]। 2015 के अंत में आर्कटिक सर्कल असेंबली से बात करते हुए, चीन के उप विदेश मंत्री मिंग ने अपने देश को "आर्कटिक में एक प्रमुख हितधारक" घोषित किया."[civ]।

चीन के लिए, ऊर्जा और खनिजों के अलावा, मछली[cv] और जैव-प्रोटीन के समृद्ध जलाशय इसकी रुचि के लिए पर्याप्त कारण हैं। इसकी समुद्री सिल्क रोड पहल जो चीन को यूरोप[cvicvii] से जोड़ती है, आर्कटिक क्षेत्र को भी महत्वपूर्ण बनाती है। (बीजिंग 'ध्रुवीय सिल्क रोड'[cviii cix]- के माध्यम से आर्कटिक में अपनी रणनीति की कल्पना कर रहा है - चीन की 2018 आर्कटिक नीति में घोषित[cx]। ध्रुवीय सिल्क रोड अपनी आर्कटिक नीति के साथ चीन को एक बढ़ती शक्ति के रूप में अपनी स्थिति का प्रदर्शन करने की अनुमति देता है। आर्कटिक में अपने दावों को सुनिश्चित करने से चीन को दक्षिण चीन सागर में अपने दावों का दावा करने में भी मदद मिलेगी[cxi cxii]। अब तक आर्कटिक में चीन के दावे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता नहीं दी गई है। क्षेत्र में प्रमुखता हासिल करने के प्रयास में, बीजिंग ने अपनी 2018 आर्कटिक नीति के माध्यम से राज्यों से 'संयुक्त राष्ट्र चार्टर और यूएनसीएलओएस और सामान्य अंतरराष्ट्रीय कानून जैसी संधियों के अनुसार

संबंधित सभी पक्षों द्वारा क्षेत्र और समुद्री अधिकारों और हितों पर विवादों के शांतिपूर्ण निपटान' का समर्थन करने का आह्वान किया। यह 'क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता की रक्षा के प्रयासों' का भी समर्थन करता है[cxiii]। आर्कटिक में रूस-चीन संबंध सूक्ष्म है। उनके साझा हित हैं लेकिन उनके प्रतिस्पर्धी हित भी हैं। मॉस्को की व्यस्तताओं को काफी हद तक अमेरिका के लिए संकेत के रूप में देखा जाता है। जैसा कि आर्कटिक में नए वाणिज्यिक संबंध उभरते हैं, रूस और चीन आर्कटिक विकास पर एक-दूसरे के साथ तेजी से सहयोग कर रहे हैं, चीन रूस को बहुत आवश्यक पूंजी प्रदान कर रहा है जो मास्को पर विभिन्न अमेरिकी और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के कारण रुक गया है। चीन के साथ 2016 दक्षिण चीन सागर सैन्य अभ्यास में रूस से दो संदेश थे:

- सबसे पहले, ड्रिल अमेरिका और जापान जैसे उसके सहयोगियों के लिए एक संकेत था, जो इस क्षेत्र में अपनी नौसैनिक शक्ति का संकेत देता है। इसने कुरील द्वीप समूह के प्रति अपना गैर-समझौतावादी रवैया भी दिखाया। कुछ हद तक यह ड्रिल इस क्षेत्र में अमेरिका के आधिपत्य को तोड़ने और यूएनसीएलओएस और हेग में अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों पर इसके प्रभाव को रोकने के लिए भी थी[cxiv]।

- दूसरे, यह अभ्यास मास्को की मुखरता, नौसैनिक शक्ति और क्षेत्र में और चीन से परे अपनी महत्वाकांक्षाओं को दिखाने के लिए भी था।

मास्को और वाशिंगटन के बीच सहयोग आर्कटिक की रक्षा करने में मदद करेगा - चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक रूप से या पर्यावरणीय रूप से टकराव का क्षेत्र बनने से हो, बल्कि सहयोग।

[V] भारत और आर्कटिक

बदलते आर्कटिक का भारत के लिए महत्व है। चीन के बढ़ते आर्कटिक पदचिह्न और रूस और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव भारत की ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन हितों को प्रभावित कर सकते हैं।

आर्कटिक क्षेत्र में भारतीय जुड़ाव का पता 1920 के दशक में लगाया जा सकता है, जब ब्रिटिश साम्राज्य के हिस्से के रूप में, इसने स्पिट्सबर्गन के द्वीपसमूह पर नॉर्वे की संप्रभुता के बारे में नॉर्वे, डेनमार्क, फ्रांस, इटली, जापान, नीदरलैंड, यूएसए और स्वीडन के साथ स्वालबार्ड की संधि पर हस्ताक्षर किए थे[cxv]। भारत ने 2007 में चार व्यापक उद्देश्यों के साथ अपने आर्कटिक कार्यक्रम की शुरुआत की: पहला, आर्कटिक ग्लेशियरों और आर्कटिक महासागर से तलछट और बर्फ कोर रिकॉर्ड का विश्लेषण करके आर्कटिक जलवायु और भारतीय मानसून के बीच परिकल्पित टेली-कनेक्शन का अध्ययन करना; दूसरा, उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग करके आर्कटिक में समुद्री बर्फ की विशेषता; तीसरा, आर्कटिक ग्लेशियरों की गतिशीलता और बड़े पैमाने पर बजट पर शोध करने के लिए समुद्र के स्तर में परिवर्तन पर ग्लेशियरों के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करना; और चौथा, मानवजनित

गतिविधियों के लिए उनकी प्रतिक्रिया की तुलना में आर्कटिक की वनस्पतियों और जीवों का एक व्यापक मूल्यांकन करने के लिए। इसके अलावा, इसने दोनों ध्रुवीय क्षेत्रों से जीवन रूपों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रस्ताव किया[cxvi]। 2013 में, भारत आर्कटिक परिषद का पर्यवेक्षक सदस्य बन गया और समय के साथ आर्कटिक में भारत की रुचि ने भी रणनीतिक महत्व प्राप्त किया है।

आर्कटिक बर्फ पिघलने से प्रेरित आर्कटिक और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन, भारत के लिए अत्यधिक विघटनकारी हो सकते हैं। भारतीय कृषि मानसून पर बहुत अधिक निर्भर है। मानसून के पैटर्न में किसी भी बदलाव का भारत जैसे देशों की कृषि-जलवायु परिस्थितियों पर प्रभाव पड़ेगा, जिनकी खाद्य सुरक्षा स्वयं पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता पर निर्भर है। तटीय क्षरण का आर्थिक असुरक्षा के दोहरे प्रभाव के साथ-साथ जनसंख्या के आंतरिक और संभावित अंतर्राष्ट्रीय विस्थापन से संबंधित सुरक्षा मुद्दों पर पड़ेगा। यह राष्ट्रीय विकास, आर्थिक सुरक्षा, जल सुरक्षा और स्थिरता, मौसम की स्थिति और मानसून पैटर्न, तटीय कटाव और ग्लेशियल पिघलने के महत्वपूर्ण पहलुओं पर इन परिवर्तनों के प्रभाव की संभावना है। आर्कटिक अनुसंधान ने स्पष्ट रूप से हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियरों पर अध्ययन शुरू करने में मदद की है।

आर्कटिक में परिवर्तन जैसे समुद्री बर्फ को पतला करना, पर्माफ्रॉस्ट का नुकसान आदि, समुद्र के स्तर में वृद्धि के अलावा, समुद्र के तापमान को भी प्रभावित करेंगे। निवास स्थान का नुकसान, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन जैसे प्लवक का नुकसान आदि मछली के स्टॉक और अन्य समुद्री जैव-प्रोटीन को प्रभावित करेंगे। इससे समुद्री अर्थव्यवस्था के विकास और भविष्य के लिए खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

जैसा कि पहले कहा गया है, आर्कटिक खनिज संपदा और ऊर्जा स्रोतों का एक जलाशय है। निकट से दीर्घावधि भविष्य में भारत को इन सभी संसाधनों की आवश्यकता होगी। भारत दुनिया में ऊर्जा का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है और आर्कटिक के संसाधनों की खोज की संभावना तलाशने में तेजी से रुचि रखता है। ऊर्जा क्षेत्र में रूस के साथ सहयोग एक साझा हित है। इसके लिए, मई 2014 में, ओएनजीसी विदेश और रूस के रोसनेफ्ट[cxvii] ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसने "रूस के अपतटीय आर्कटिक में उपसतह सर्वेक्षणों, अन्वेषण और मूल्यांकन गतिविधियों और हाइड्रोकार्बन उत्पादन में कंपनियों के सहयोग के लिए मार्ग प्रशस्त किया"[cxviii]।

सितंबर 2019 में पीएम नरेंद्र मोदी की रूस यात्रा के दौरान इस क्षेत्र के प्रति भारत की नीति भी केंद्रीय मुद्दा थी। संयुक्त बयान में आर्कटिक में भारत की रुचि और इसकी तत्परता का उल्लेख किया गया है "... आर्कटिक परिषद में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए "। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारतीय ऊर्जा कंपनियों को आर्कटिक एलएनजी 2 जैसी परियोजनाओं में भाग लेने के लिए भी आमंत्रित किया, जो नोवाटेक का एलएनजी संयंत्र है और प्रति वर्ष लगभग 19.8 मिलियन टन एलएनजी की क्षमता होने का

अनुमान है और 2022-23 तक इसके परिचालन में आने की आशा है। जैसा कि अमेरिका के साथ संबंध गहराते हैं, यह संभावना है कि भारत के भविष्य के सहयोग में आर्कटिक को प्रमुखता से शामिल किया जाएगा। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां आर्कटिक में सहयोग उनके पारस्परिक लाभ के लिए है।

रूस और अमेरिका की तरह, भारत को भी आर्कटिक क्षेत्र में चीन की बढ़ती रुचि पर चिंता है। खुद को एक "जिम्मेदार प्रमुख देश" के रूप में बुलाकर, चीन ने आर्कटिक में चीन की भू-राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बारे में आर्कटिक या गैर-आर्कटिक राज्यों की चिंताओं को दूर करने की कोशिश की है। आर्कटिक के लिए "अंतर्राष्ट्रीय कानून और सहयोग के लिए बीजिंग की प्रतिबद्धता और पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक हितों को संतुलित करने" के बावजूद, भारत चिंतित है कि यह क्षेत्र प्रतिस्पर्धा के लिए एक क्षेत्र बन सकता है।

चूंकि प्राकृतिक पर्यावरण आर्कटिक के सुरक्षा वातावरण को प्रभावित करता है, इसलिए आर्कटिक के देशों के साथ अपने जुड़ाव को बढ़ाना भारत के हित में है। इस संबंध में, भारत की मसौदा आर्कटिक नीति (2021) ने इस क्षेत्र के प्रति भारत के दृष्टिकोण का खाका प्रस्तुत किया। यह पांच स्तंभों पर आधारित है - विज्ञान और अनुसंधान; आर्थिक और मानव विकास सहयोग; परिवहन और कनेक्टिविटी; शासन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग; राष्ट्रीय क्षमता निर्माण। यह वैज्ञानिक, आर्थिक और राजनयिक क्षेत्रों को शामिल करते हुए कार्य योजनाओं के माध्यम से की जाने वाली गतिविधियों और पहलों की एक विस्तृत श्रृंखला को सूचीबद्ध करता है। यह नीति भारत के राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा के लिए ध्रुवीय क्षेत्रों - आर्कटिक और अंटार्कटिक - की बढ़ती जागरूकता और बढ़ती रणनीतिक प्रासंगिकता का एक स्वागत योग्य संकेत है। आर्कटिक में भारत के हितों को रेखांकित करने वाली नीति की बहुत आवश्यकता थी। यह आर्कटिक में रूस-अमेरिका संबंधों की गतिशीलता को नेविगेट करने में भी मदद करेगा क्योंकि भारत दोनों देशों के साथ रणनीतिक संबंध साझा करता है।

[VI] निष्कर्ष: आर्कटिक पर अमेरिका-रूस संबंधों का प्रभाव

अपने बढ़ते महत्व के साथ, आर्कटिक बाहरी भू-राजनीतिक प्रभावों के लिए अतिसंवेदनशील हो रहा है, जबकि इसे प्रभावित करने वाली घटनाओं में बहुत सीमित भूमिका निभा रहा है। आर्कटिक के संसाधन - अमेरिका और रूस के बीच बढ़ते तनाव और आर्कटिक के रणनीतिक स्थान --, प्राकृतिक और मानव, सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नीति निर्माण में ध्यान देने की मांग करते हैं। अमेरिका और रूस के बीच द्विपक्षीय संबंधों का आर्कटिक और इसके पर्यावरण की रक्षा के लिए मौजूद विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रभाव पड़ता है। ये संबंध सदस्य देशों के तटरक्षकों के बीच सहयोग पहलों को भी प्रभावित करते हैं। आर्कटिक परिषद आर्कटिक शासन से निपटने वाला प्राथमिक संगठन है और दोनों देशों को बहुपक्षीय और द्विपक्षीय दोनों स्तरों पर सहयोग और सहयोग करने का अवसर प्रदान करता है। परिषद के अन्य सदस्य-राज्यों के पास एक शांतिपूर्ण,

सुरक्षित और टिकाऊ आर्कटिक के विकास में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है। बहरहाल, यह ध्यान देने की जरूरत है कि रूस के अलावा परिषद के अन्य सभी सदस्य अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध साझा करते हैं। इसका मतलब है कि अमेरिका अपने साथी देशों के फैसले को प्रभावित कर सकता है और उन्हें रूस से दूर कर सकता है। इसका मतलब यह भी है कि, जैसे-जैसे रूस के साथ तनाव बढ़ता है, अमेरिका और उसके सहयोगी सुदूर उत्तर में नाटो की सैन्य उपस्थिति में वृद्धि की संभावना को देख रहे हैं। यह एक सैन्यीकृत आर्कटिक की संभावना को बढ़ाता है।

अन्य संकटों का भी आर्कटिक पर प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए, जैसे-जैसे यूक्रेन पर संघर्ष बढ़ता गया, इसने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रूस और अमेरिका के बीच तनाव में वृद्धि की, जिससे आर्कटिक में भी दोनों के बीच सहयोग प्रभावित हुआ। इन गतिशीलताओं ने आर्कटिक क्षेत्र के अर्थशास्त्र और खनिज जमा, अनुसंधान और खोज और बचाव कार्यों के विकास को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। रूसी कार्रवाइयों के परिणामस्वरूप, अमेरिका ने तटरक्षक सेवाओं द्वारा संयुक्त खोज और बचाव प्रशिक्षण अभियान को बंद कर दिया। रूस के विरुद्ध अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिबंधों की अद्यतन सूची में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण ऊर्जा क्षेत्र का उल्लेख है। जैसा कि पश्चिमी देशों ने प्रतिबंध के परिणामस्वरूप रूस को गहरे पानी की ड्रिलिंग के लिए प्रौद्योगिकी को स्थानांतरित करने से इनकार कर दिया, इसने रूस के लिए आर्कटिक में तेल और शेल तेल निष्कर्षण की संभावनाओं को कम कर दिया है। प्रतिबंधों ने रूस में तेल और ऊर्जा परियोजनाओं के निवेश और वित्तपोषण पर भी प्रतिबंध लगा दिया, जिससे कई पश्चिमी ऊर्जा कंपनियों को रूस के आर्कटिक अपतटीय क्षेत्र को विकसित करने के लिए परियोजनाओं से वापस लेना पड़ा।

अमेरिका-रूस संबंधों में तनाव ने आर्कटिक में तटीय राज्यों के लिए स्थिरता और सुरक्षा के बारे में चिंताएं पैदा की हैं। ये देश, जबकि आकार और शक्ति में छोटे हैं, इस क्षेत्र और आर्कटिक परिषद में महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं। जैसे-जैसे दो पूर्व महाशक्तियों के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है, इन छोटे देशों ने अपने सुरक्षा और रक्षा कार्यक्रमों की समीक्षा और संशोधन करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। वे इस क्षेत्र में आधुनिकीकरण और अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए योजनाओं का निर्माण कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, नॉर्वेजियन वायु सेना ने आर्कटिक सर्कल में अपनी सॉर्टियों की आवृत्ति में वृद्धि की है। नॉर्वेजियन वायु सेना ने मार्च 2021 में आर्कटिक सर्कल के पास रात के अभ्यास के लिए अपने बमवर्षक और एफ -35 का भी इस्तेमाल किया। रूसी वायुसेना ने भी यहां अपनी गतिविधियां बढ़ा दी हैं। आर्कटिक के तटीय राज्यों ने अमेरिका और रूस दोनों को आर्कटिक को एक साथ विकसित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि आर्कटिक कम राजनीतिक तनाव का क्षेत्र बना हुआ है।

रूस के लिए, आर्कटिक एशिया से यूरोप और आगे उत्तरी अमेरिका के लिए नए शिपिंग मार्गों के संदर्भ में एक अवसर प्रस्तुत करता है। यह न केवल रूस को अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करता है, बल्कि इसे अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को गहरा करने की भी अनुमति देता है जो इस नए समुद्री मार्ग का उपयोग करना चाहते हैं। जबकि एनएसआर के उद्घाटन से कंटेनर शिपमेंट के लिए लगने

वाले समय को कम करने की संभावना है और इस प्रकार लागत में कटौती की जा सकती है, पर्यावरणविद पहले से ही नाजुक वातावरण में बढ़ते कंटेनर ट्रैफ़िक के प्रभावों के बारे में चिंतित हैं। जहाजों की आवाजाही और उनके द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट आर्कटिक जल के प्रदूषण और वार्मिंग को और बढ़ाएगा। यह भी डर है कि तेल रिसाव न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएगा, बल्कि क्षेत्र की ठंडी जलवायु के कारण सफाई अभियान महंगा होगा। सबसे बड़े समुद्र तट वाले देश के रूप में, आर्कटिक में संकट का जवाब देने वाला पहला देश रूस का बोझ होगा।

हालांकि, रूस का दावा है कि एनएसआर एक व्यवहार्य मार्ग है, हालांकि,ऐसा लगता है कि यह अभी तक खुद को व्यवहार्यता साबित नहीं कर सका है क्योंकि समुद्री बर्फ जहाजों की आवाजाही के लिए एक बड़ी बाधा पैदा करना जारी रखता है। बर्फ के फ्लोटिंग ब्लॉकों को न केवल विशेष जहाजों की आवश्यकता होती है, बल्कि आर्कटिक को नेविगेट करने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित कप्तानों और चालक दल की आवश्यकता होती है। यह इस मार्ग से जहाजों के पारगमन के लिए स्वेज नहर की तुलना में महंगा रहता है।

सबसे बड़े आर्कटिक तटरेखा राष्ट्र के रूप में- रूस, डिफ़ॉल्ट रूप से, खोजों और बचाव के लिए कॉल को संभालने के लिए अच्छी तरह से तैयार होने की आवश्यकता होगी। यह वह देश है जिसमें आर्कटिक जल में सबसे अधिक संख्या में बर्फ तोड़ने वाले काम कर रहे हैं, और बहुत जल्दी जरूरत में जहाज को सहायता प्रदान कर सकते हैं। इसमें आर्कटिक की कठोर जलवायु में काम करने के लिए कर्मियों के संदर्भ में विशेषज्ञता भी है। यह रूस के आर्कटिक क्षेत्र में आर्कटिक परिवहन प्रणाली और मत्स्य पालन परिसर के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण और विकास के लिए अपनी क्षमताओं को और बढ़ा रहा है[cxix]। हालांकि,इस क्षेत्र में रूस का बढ़ता सैन्य बुनियादी ढांचा अन्य आर्कटिक राज्यों के लिए चिंता का कारण बन गया है। जबकि सैन्य क्षमताओं को आर्थिक हित की रक्षा करने की आवश्यकता होती है क्योंकि नागरिक और वाणिज्यिक बुनियादी ढांचा सीमित है, बढ़ता रूसी सैन्य ध्यान एक चिंता का विषय है। रूस ने कहा है कि वह अपनी तटरक्षक सुविधाओं को मजबूत कर रहा है, लेकिन 2020 के लिए उसके नीति दस्तावेज में यह भी स्पष्ट किया गया है कि सेना को विभिन्न सैन्य-राजनीतिक स्थितियों में सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए।

अमेरिका के लिए, एक बड़ी बाधा यह तथ्य है कि अमेरिकी कांग्रेस ने यूएनसीएलओएस की पुष्टि नहीं की है। यह संप्रभुता के मुद्दों और आर्कटिक के शासन के फैसले के लिए उपलब्ध सबसे महत्वपूर्ण कानूनी ढांचे में से एक में भाग लेने से अमेरिका को बाहर करता है। अमेरिका को यूएनसीएलओएस का हिस्सा नहीं बनने के अपने फैसले पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। अमेरिकी हितों को सुरक्षित करने में प्राथमिक एजेंसी होने के नाते डीओडी को अपने मिशनों में क्षेत्रीय, नियामक और पर्यावरणीय विचारों को समन्वित करने के लिए विशेष रूप से अन्य विभागों, मातृभूमि सुरक्षा, वाणिज्य और पर्यावरण के साथ काम करना होगा। आर्कटिक में कई स्वदेशी जनजातियां हैं जो इस क्षेत्र को घर बुलाती हैं और उनकी चिंताओं को बोर्ड पर ले जाने की आवश्यकता है क्योंकि रूस और अमेरिका अपनी आर्कटिक नीतियों का निर्माण करते हैं।

[VI] (क) आर्कटिक में भविष्य (परमाणु) हथियारों की दौड़

अपने परमाणु मुद्रा समीक्षा 2018 में, यूएस डीओडी ने कहा कि, "जबकि अमेरिका ने परमाणु हथियारों की संख्या और विशिष्टता को कम करना जारी रखा है, रूस और चीन सहित अन्य लोग विपरीत दिशा में चले गए हैं"[cxx]। यह तेजी से सोचा जा रहा है कि रूस-अमेरिका परमाणु मुद्रा काफी हद तक चीन की बढ़ती परमाणु परिसंपत्तियों का मुकाबला करने का एक प्रयास है। इसका एक उदाहरण इंटरमीडिएट-रेंज न्यूक्लियर फोर्सेस (आईएनएफ) संधि है[cxxi]। 2018 में, राष्ट्रपति ट्रम्प ने घोषणा की कि अमेरिका आईएनएफ संधि से पीछे हट रहा है, यह दावा करते हुए कि रूस समझौते की शर्तों का उल्लंघन कर रहा था, रक्षा अध्ययन के अधिकांश अमेरिकी विशेषज्ञों का मानना है कि वापसी अमेरिका को चीन और रूस को चुनौती देने के लिए मिसाइलों के एक दुर्जेय शस्त्रागार का निर्माण करने की अनुमति देती है। 2 अगस्त, 2019 को, संयुक्त राज्य अमेरिका औपचारिक रूप से आईएनएफ संधि से वापस ले लिया। आईएनएफ संधि का पतन रूस को मध्यवर्ती दूरी की मिसाइलों की महत्वपूर्ण संख्या विकसित करने और तैनात करने की अनुमति देता है जो वह आर्कटिक तट पर अपने ठिकानों में रख सकता है। यह भी डर था कि आईएनएफ के निधन से न्यू स्ट्रैटेजिक आर्म्स रिडक्शन ट्रीटी (न्यू स्टार्ट) प्रभावित हो सकती है, जो रणनीतिक परमाणु हथियारों को सीमित करती है और यह एक महत्वपूर्ण हथियार नियंत्रण समझौता है जो अभी भी अमेरिका और रूस के बीच खेल में है। 2021 में राष्ट्रपति बिडेन और राष्ट्रपति पुतिन ने 2026 तक एक और पांच साल के लिए नई स्टार्ट को विस्तारित करने पर सहमति व्यक्त की. इसके अलावा, जिनेवा में दोनों सरकार के प्रमुखों के बीच हाल ही में शिखर सम्मेलन ने दोनों देशों को हथियार नियंत्रण के एक नए चरण की ओर बढ़ने और आर्कटिक पर सहयोग का विस्तार करने का अवसर प्रदान किया है।

नाटो की परमाणु निरोध नीति में कहा गया है कि यह एक 'परमाणु गठबंधन' है, जिसका मूल उद्देश्य प्रभावी प्रतिरोध है। आर्कटिक में बढ़ती रूसी सैन्य उपस्थिति के जवाब में, नाटो भी सदस्य देशों द्वारा बढ़ती उपस्थिति और गश्त के लिए जोर दे रहा है। एनओआरएडी के भीतर, अमेरिका के पास संभावित परमाणु मिसाइल हमलों से खुद को बचाने और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों को संचालित करने की क्षमता है। एनओआरएडी यूएस नॉर्थकॉम और यूएस स्ट्रैटेजिक कमांड (यूएसस्ट्रैटकॉम) के साथ घनिष्ठ सहयोग में काम करता है, जिसमें "एकीकृत कमांड प्लान के माध्यम से सौंपी गई वैश्विक जिम्मेदारियां हैं, जिसमें रणनीतिक प्रतिरोध, परमाणु संचालन, अंतरिक्ष संचालन, संयुक्त विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम संचालन, वैश्विक हड़ताल, मिसाइल रक्षा और विश्लेषण और लक्ष्यीकरण शामिल हैं"[cxxii]।

जैसा कि अमेरिका ने अपनी मिसाइल रक्षा ढाल में सुधार करना शुरू कर दिया है, रूस ने अपनी परमाणु बलों की क्षमता को बढ़ा दिया है। रूस न केवल निर्माण कर रहा है, बल्कि अपने प्लेटफार्मों पर बेहतर और उच्च दूरी की अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों को भी तैनात कर रहा है। इसकी परमाणु पनडुब्बियां आर्कटिक महासागर सहित लड़ाकू गश्ती ड्यूटी पर रही हैं। रूस अमेरिका से परमाणु मिसाइल हमलों में

वृद्धि की संभावना का मुकाबला करने के लिए अपने समुद्र आधारित परमाणु बलों को विकसित करना जारी रखने की संभावना है। रूस अपनी सभी सीमाओं पर एक निरंतर रडार नेटवर्क बनाने की प्रक्रिया में है, जबकि यह सुनिश्चित करता है कि जमीन और अंतरिक्ष आधारित मिसाइल सिस्टम अपडेट किए जाएं। रूस ने आर्कटिक में अपने क्षेत्र में सैन्य अड्डे भी बनाए हैं। वर्तमान में अमेरिका के निकटतम अपनी सीमाओं पर इसके तीन अड्डे हैं, जबकि पश्चिमी मोर्चे पर नाटो के साथ अपनी सीमाओं के पार लगभग 450 ऐसे स्टेशन खोले गए हैं। रूस के उत्तरी बेड़े, आर्कटिक महासागर के प्रभारी बेड़े को सबसे अग्रिम सतह के जहाजों के साथ आधुनिक बनाया जा रहा है और यह अपने उम्र बढ़ने वाले पनडुब्बी बल को अपग्रेड करने की प्रक्रिया में है। यह अपने बंदरगाह बुनियादी ढांचे के ओवरहालिंग के अलावा है; रूस ने हाल ही में आर्कटिक क्षेत्र के लिए अपने तीन परमाणु संचालित आइसब्रेकरों में से पहला लॉन्च किया है।

आर्कटिक में इन सैन्य / रक्षा प्रगति के बावजूद, क्षेत्र के संसाधनों और समुद्री-लेन का शासन एक व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ने वाला एक समन्वित प्रयास है। यह धारणा है कि आर्कटिक पल के लिए वैश्विक तनाव के लिए एक फ्लैशपॉइंट में विकसित हो सकता है, दूरस्थ रहता है। फिर भी, जैसा कि इस क्षेत्र में सैन्य गतिविधि में वृद्धि हुई वाणिज्यिक गतिविधि के साथ-साथ ऊपर की ओर प्रक्षेपवक्र दिखाई देता है, दुर्घटनाओं, गलतफहमी और गलतफहमी की संभावना बढ़ जाती है। "यह पूरी तरह से संभव है कि इनमें से कुछ आधुनिक हथियारों का उपयोग आर्कटिक से आने वाले खतरों से क्षेत्र की रक्षा के लिए किया जाएगा[cxxiii]। किसी को यह ध्यान में रखना होगा कि आर्कटिक वैश्विक जलवायु परिवर्तन और बढ़ी हुई गतिविधि से जुड़ा हुआ है, जिसमें सैन्य गतिविधि भी शामिल है, जो पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है, इसके वैश्विक परिणाम होंगे, जिसमें उन लोगों के लिए भी शामिल है जो इसे घर कहते हैं।

फिलहाल रूस और अमेरिका के बीच नया शीत युद्ध ऐसा नहीं लगता है जो आर्कटिक में हथियारों की दौड़ या परमाणु हथियारों की दौड़ का कारण बनेगा। सैन्य परिसंपत्तियों का निर्माण बढ़ गया है और सैन्य अभ्यास और सॉर्टियों में वृद्धि हुई है। फिर भी, यह आर्कटिक का सैन्यीकरण करने के बजाय परियोजना शक्ति के लिए अधिक है। सैन्य परिसंपत्तियों की आवश्यकता होती है क्योंकि सेना अक्सर कदम उठाती है जहां क्षेत्र में नागरिक क्षमता की कमी या महंगी होती है जैसे कि खोज और बचाव अभियान। निकट भविष्य में, यह उन संसाधनों का दावा करने के लिए एक दौड़ होने की संभावना है जो क्षेत्र को पेश करना है। निस्संदेह, इन दोनों देशों के साथ-साथ इस क्षेत्र में असुरक्षा की वृद्धि होगी। इस क्षेत्र में सैन्य क्षमताओं में उन्नयन के साथ-साथ आर्कटिक और गैर-आर्कटिक देशों (जैसे चीन) के बीच अपने क्षेत्रों का विस्तार करने या उनका दावा करने के लिए प्रतिस्पर्धा के साथ, आर्कटिक क्षेत्र एक नए शीत युद्ध के उद्भव का सामना करता है।

[VI] (ख) सहयोग की जरूरत

आर्कटिक में सहयोग को आसपास की समझ पर आधारित होना चाहिए जिसमें स्वदेशी समुदायों के अनुभवों के साथ-साथ सैन्य और मर्चेंट नेवी क्रू के सदस्य शामिल हैं जो इसके पानी में काम करते हैं। इस तरह के कठोर वातावरण में काम करने की कठिनाइयां सहयोग करने के लिए स्वाभाविक रूप से फायदेमंद बनाती हैं; तेल रिसाव जैसी चुनौतियां, वनस्पतियों और जीवों की रक्षा करने की आवश्यकता प्रकृति में अंतर्राष्ट्रीय हैं और इसलिए, सामूहिक प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है और अंत में, जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ी हुई समुद्री पहुंच के लिए भी सहयोग की आवश्यकता होगी। इस क्षेत्र में मौजूद हितधारकों द्वारा सामना की जाने वाली आम चुनौतियों ने एक साथ काम करना आसान और आवश्यक बना दिया है। इस पृष्ठभूमि में, अमेरिका और रूस राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने, आर्कटिक संसाधनों को एक स्थायी तरीके से प्रबंधित करने, पर्यावरण की रक्षा करने, वैज्ञानिक अनुसंधान को मजबूत करने, सामुदायिक विकास, वैज्ञानिक अनुसंधान को मजबूत करने और आर्कटिक से संबंधित मामलों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के निर्माण में पारस्परिक हितों को साझा करते हैं। रूस, अमेरिका और 'पश्चिम' के बीच बढ़ते तनाव के बावजूद, आर्कटिक मामलों पर सहयोग काफी हद तक बरकरार है।

रूस और अमेरिका दोनों ने वार्ता और सहयोग के लिए आर्कटिक परिषद की केंद्रीयता पर जोर दिया है, और उनके क्रेडिट के लिए, यह सुनिश्चित किया है कि परिषद बिना किसी व्यवधान के काम करे। यद्यपि रक्षा से संबंधित विषयों को आर्कटिक परिषद के जनादेश से बाहर रखा गया है, यह आर्कटिक सहयोग के लिए सबसे महत्वपूर्ण संगठनों में से एक बना हुआ है। मंच के आठ आर्कटिक देशों, छह स्वदेशी लोगों के संगठनों और तेरह पर्यवेक्षक राज्यों को आर्कटिक में सुरक्षा, आर्कटिक पर्यावरण की रक्षा और पारस्परिक चिंता के विभिन्न क्षेत्रों पर एक साथ काम करने जैसे कई मुद्दों पर सहयोग करने के लिए प्रमुखता से रखा गया है। निरंतर वार्ता और राजनीतिक बातचीत भी राष्ट्रों को सर्वोत्तम अभ्यासों और वैज्ञानिक ज्ञान पर आदान-प्रदान के माध्यम से नाजुक वातावरण का पता लगाने और संरक्षित करने का अवसर देती है।

शोध-पत्र का उद्देश्य आर्कटिक में परिवर्तनों को समझना था जिसमें क्षेत्र के सैन्यीकरण और रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर इसके प्रभाव शामिल थे। दोनों देशों को आर्कटिक के प्रति अपनी संबंधित नीतियों में निवेश किया जाता है, हालांकि, अलग-अलग डिग्री में। सबसे बड़े आर्कटिक तटरेखा वाले देश के रूप में और इसके साथ रहने वाले लगभग दो मिलियन लोगों के रूप में, रूस को आर्कटिक में असमान रुचि होगी। रूस का मानना है कि यह आर्थिक क्षेत्र में आर्कटिक से लाभान्वित हो सकता है और इसने रूस को यमल तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) परियोजना जैसी ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश करने और ऐसी अन्य परियोजनाओं का पता लगाने के लिए प्रेरित किया है। सबसे बड़े आर्कटिक राष्ट्र के रूप में, रूस को डिफ़ॉल्ट रूप से अपने तटरक्षक और नौसैनिक परिसंपत्तियों में सुधार करना होगा, और अन्य उपकरणों जैसे रडार सुरक्षित मार्ग, खोज और बचाव अभियानों और आपातकालीन स्थितियों में तैनाती सुनिश्चित करने के लिए जैसे कि तेल रिसाव आदि को रोकना होगा। रूस को यूएनसीएलओएस और

आर्कटिक को नियंत्रित करने वाले मौजूदा कानूनी आदेश से लाभ हुआ है और इस नियम आधारित आदेश को परेशान करने से इसे बहुत कम लाभ हुआ है।

अलास्का के आधार पर अमेरिका, एक आर्कटिक देश है और इस क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक, ऊर्जा, पर्यावरणीय और अन्य हित हैं। आर्कटिक के महत्व की प्राप्ति का मतलब है कि यह संसाधन अन्वेषण, संप्रभुता और नेविगेशन अधिकारों पर विवाद, और सैन्य बलों और संचालन जैसे मुद्दों के संदर्भ में समग्र अमेरिकी नीति निर्माण का हिस्सा बन रहा है। पिघलने वाली समुद्री बर्फ वाणिज्यिक जहाज और क्रूज शिपिंग के साथ-साथ अनुसंधान जहाज, और नौसेना की सतह शिपिंग संचालन में वृद्धि करेगी। यह आर्कटिक में तेल और अन्य संसाधनों की खोज की क्षमता को भी बढ़ाएगा। इन गतिविधियों के लिए आर्कटिक के पानी में अमेरिकी तटरक्षक और नौसेना की बढ़ती उपस्थिति की आवश्यकता होगी। इसके लिए रूस सहित अमेरिका और अन्य आर्कटिक राज्यों के बीच समन्वय और बातचीत की भी आवश्यकता होगी। यह संभावना नहीं है कि दोनों राष्ट्रआर्कटिक पर संघर्ष का जोखिम उठाएंगे, लेकिन यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि समुद्री बर्फ में कमी के साथ, रूस अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए इस क्षेत्र में अपनी सेना को अपडेट और अपस्केल करना जारी रखेगा और यह वास्तव में बढ़ती नाटो उपस्थिति के बारे में चिंतित है।

जबकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार की आशा कर रहा है जो मध्यम से दीर्घकालिक क्षेत्र में अधिक सहयोग की अनुमति दे सकता है, कुछ का मानना है कि तनावपूर्ण संबंध आर्कटिक में 'सैन्य या हथियारों की दौड़' में योगदान देंगे। आर्कटिक संचालन के लिए वित्तीय रूप से महंगा बना हुआ है। जलमार्ग नेविगेट करने के लिए विश्वासघाती रहते हैं और विशेषज्ञ शिपिंग चालक दल की आवश्यकता होती है। हाइड्रोकार्बन भंडार का दोहन करना मुश्किल और पर्यावरणीय रूप से महंगा बना हुआ है और आर्कटिक पर्यावरण शत्रुतापूर्ण बना हुआ है। यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि रूस और अमेरिका सहित सभी आर्कटिक राष्ट्र प्रतिस्पर्धा की तुलना में सहयोग से अधिक प्राप्त करने के लिए खड़े हैं। जून 2021 के जिनेवा शिखर सम्मेलन में यह स्पष्ट था, जहां राष्ट्रपति बिडेन और राष्ट्रपति पुतिन ने आर्कटिक के बारे में बात की थी कि यह समझ का क्षेत्र है या संघर्ष के बजाय सहयोग का क्षेत्र है। चीन और भारत जैसे गैर-आर्कटिक राज्यों के प्रवेश से आर्कटिक के लिए जटिलताओं और सहयोग का एक नया आयाम खुलेगा, जिसमें रूस और अमेरिका भी शामिल हैं।

आर्कटिक एकमात्र साझा अमेरिका-रूस सीमा का घर है। संचार के चैनलों को मजबूत करना और संघर्ष से बचने, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को लागू करने और इस क्षेत्र में पर्यावरण और संप्रभुता की रक्षा करने के लिए परिचालन प्रोटोकॉल का निर्माण करना विवेकपूर्ण होगा। सहयोग अमेरिका और रूस को भविष्य के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने की दिशा में काम करने की अनुमति देता है जैसे कि जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करना। आर्कटिक के प्राकृतिक संसाधनों के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा के साथ, यह महत्वपूर्ण है कि रूस और अमेरिका दोनों एक-दूसरे के साथ सहयोग की नीति बनाने के लिए काम करें। आर्कटिक

राज्यों के बीच क्षेत्रीय सहयोग उनके लिए अपने क्षेत्रीय लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और अपनी आर्कटिक आबादी की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। शायद, आर्कटिक का कठोर वातावरण सहयोग के लिए आशा प्रदान करता है। जैसा कि कानून ऑफ द सी के विद्वान कैटलिन एंट्रिम ने कहा, "जब तत्व आपके सामान्य दुश्मन होते हैं तो दोस्त बनना आसान होता है"[cxxiv]।

****

पाद टिप्पणियां

[i] बाल गंगाधर टिकल, "वेदों में आर्कटिक होम," टिकल ब्रदर्स, पूना, 1925

[ii] आर्कटिक परिषद, "स्थायी प्रतिभागी," https://arctic-council.org/index.php/en/about-us/permanent-participants, 12 जून 2019 को अभिगम्य।

[iii] अलेक्जेंडर पिफेरो स्पोहर, जेसिका दा सिल्वा होरिंग आदि, "आर्कटिक का सैन्यीकरण: राजनीतिक, आर्थिक और जलवायु चुनौतियां," https://www.ufrgs.br/ufrgsmun/2013/wp-content/uploads/2013/10/The-Militarization-of-the-Arctic-Political-Economic-and-Climate-Changes.pdf, 12 जून 2019 को अभिगम्य।, पृष्ठ 12

[iv] अलास्का सार्वजनिक भूमि सूचना केंद्र, https://www.alaskacenters.gov/faqs-people-often-ask/how-close-alaska-russia, 23 जनवरी. 2019 को अभिगम्य।

[v] भाषण का पूरा पाठ https://www.barentsinfo.fi/docs/Gorbachev_speech.pdf पर उपलब्ध है

[vi] ----, "मुरमांस्क में मिखाइल गोर्बाचेव का भाषण लेनिन के आदेश की प्रस्तुति के अवसर पर औपचारिक बैठक में और मुरमांस्क शहर के लिए सोने के स्टार,https://www.barentsinfo.fi/docs/Gorbachev_speech.pdf, 15 अप्रैल 2021 को अभिगम्य।

[vii] एटलैंड, क्रिस्टियन, मिखाइल गोर्बाचेव, मुरमांस्क पहल, और अंतरराज्यीय के गैर-प्रतिभूतिकरण: आर्कटिक में संबंध" Cooperation and Conflict सहयोग और संघर्ष, भाग. 43, सं. 3, 2008, पृष्ठ. 289-311. JSTOR, www.jstor.org/stable/45084526. 1 अप्रैल, 2021को अभिगम्य।

[viii] सुसान जॉय हसॉल, "वार्मिंग आर्कटिक के प्रभाव," *कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004*, पृष्ठ-14-15

[ix] आईपीसीसी, "एक बदलते जलवायु में महासागर और क्रिओस्पेयर पर विशेष रिपोर्ट,"https://www.ipcc.ch/srocc/, 01 अप्रैल 2021 को अभिगम्य।

[x] पूर्वोक्त

[xi] उत्तरी सागर मार्ग नॉर्वे के साथ रूस की सीमा के पास मुरमांस्क से अलास्का के पास बेरिंग जलडमरूमध्य तक चलता है। यह अनुमान लगाया गया है कि एनएसआर के माध्यम से योकोहामा और हैम्बर्ग के बंदरगाहों के बीच गणना का समय, एशिया और यूरोप के बीच 7,200 समुद्री मील की शिपिंग दूरी, स्वेज नहर के माध्यम से दक्षिणी मार्ग की तुलना में 37 प्रतिशत कम है। रूसी उप परिवहन मंत्री श्री जूरी त्स्वेतको के अनुसार, एनएसआर के माध्यम से शिपिंग ट्रैफ़िक 2018 के बाद से दोगुना हो गया है। नवंबर 2018 तक, इस मार्ग ने रूसी अनुमानों के अनुसार 15 मिलियन टन के कार्गो का अनुभव किया।

[xii] माल्टे हम्पर्ट, "उत्तरी सागर मार्ग पर रैफिक दोगुना हो जाता है क्योंकि रूस का उद्देश्य बर्फ-वर्ग की आवश्यकताओं को कम करना है", *आर्कटिक आज*, 26 नवंबर, 2018. https://www.arctictoday.com/traffic-northern-sea-route-doubles-russia-aims-reduce-ice-class-requirements/, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xiii] शाऊल रॉक्स और कैथरीन हॉर्सफील्ड, "सीबेड खनिज संसाधनों के शोषण के लिए लागू राष्ट्रीय कानूनों की समीक्षा," *समुद्र तल का कानून: सीबेड संसाधनों का उपयोग, उपयोग और संरक्षण* (Leiden ; Boston, 2020), पृष्ठ 287-314

[xiv] फिनलैंड, नॉर्वे, स्वीडन और कनाडा इस तरह के किटिट्ला गोल्ड खान या लेपलेंड, फिनलैंड में केविटसा कॉपर-निकल ओपन पिट खान के रूप में संयुक्त खनन परियोजनाओं हो रही है. आर्कटिक में वृद्धि पर धातु और खनिज:

[xv] एफईएम का एक प्रतिबिंब - फेनोस्कैंडियन अन्वेषण और खनन सम्मेलन 2017", *आर्कटिक केंद्र: लैपलैंड विश्वविद्यालय*, 28 नवंबर, 2011. https://www.arcticcentre.org/blogs/Metals-and-Minerals-on-the-rise-in-the-Arctic-A-reflection-of-the-FEM---Fennoscandian-Exploration-and-Mining-Conference-2017/me32fvt0/2b8fd23a-3dd9-4a03-b9bf-7d2fe5499c31, अधिक जानकारी के लिए कोई भी संदर्भित कर सकता है "आर्कटिक खनिजों ने विहंती, फिनलैंड में एक अन्वेषण परमिट के लिए आवेदन किया है, और पेरापोहजा, फिनलैंड में दो और आरक्षण प्रदान किए गए हैं।", 1 मार्च, 2019 https://newsclient.omxgroup.com/cdsPublic/viewDisclosure.action?disclosureId=877740&lang=en, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xvi] रूस के खनन उद्योग प्राथमिक और प्लेसर हीरे (कुल रूसी उत्पादन का 99 प्रतिशत), प्लैटिनम-समूह तत्व (पीजीई) (98 प्रतिशत), निकल और कोबाल्ट (80 प्रतिशत से अधिक), क्रोमियम और मैंगनीज (90 प्रतिशत), तांबा (60 प्रतिशत), एंटीमनी, टिन, टंगस्टन और दुर्लभ धातुओं (50 से 90 प्रतिशत तक) और सोना (लगभग 40 प्रतिशत) का उत्पादन करते हैं।

[xvii] लस्सी हेनिनेन, अलेक्जेंडर सर्गुनिन और ग्लेब यारोवॉय, "आर्कटिक में रूसी रणनीतियाँ: एक शीत युद्ध से बचना", वाल्दाई चर्चा क्लब: ग्रांटीज रिपोर्ट, 2014, पृष्ठ 9, https://www.uarctic.org/media/857300/arctic_eng.pdf, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xviii] पैट्रिक एंडसन, लेस्पर विल्लेंग ज्यूथेन और पेर काल्विग, "ग्रीनलैंड में चीनी खनन: आर्कटिक एक्सेस या खनिजों तक पहुंच?, *आर्कटिक ईयरबुक 2018*, पृष्ठ 3. https://arcticyearbook.com/images/yearbook/2018/China-and-the-Arctic/7_AY2018_Andersson.pdf, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xix] चूंकि यूरोपीय आर्कटिक देशों में से कुछ नाटो सदस्य भी हैं, इसलिए नाटो चार्टर का अनुच्छेद 5 आर्कटिक में मान्य है। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा रक्षा तंत्र के आधुनिकीकरण को भी नाटो सदस्यों को निरंतर सुरक्षा के आश्वासन देने के लिए निर्देशित किया जाता है।

[xx] डगलस सी नॉर्ड, "आर्कटिक शासन की चुनौतियां,"https://www.wilsonquarterly.com/quarterly/into-the-arctic/the-challenge-of-arctic-governance/, 12 अप्रैल 2021 को अभिगम्य।

[xxi] पूर्वोक्त

[xxii] मारिया लागुटिना, इक्कीसवीं सदी में रूस की आर्कटिक नीति: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयाम, (रोवमैन और लिटिलफील्ड, 2019) पृष्ठ. 10-11

[xxiii] संयुक्त राज्य अमेरिका इस क्षेत्र में बमवर्षकों को विकसित करने वाला पहला देश था।

[xxiv] जेनिफर केलहर और हारून लॉर, "आर्कटिक नीति और कानून चयनित दस्तावेजों के लिए संदर्भ", पर्यावरण कानून अंतर्राष्ट्रीय परिषद - सतत विकास की ओर - (आईसीईएल) पर्यावरण कानून पर आईयूसीएन आयोग के आर्कटिक टास्क फोर्स के लिए, 2011, पृष्ठ 107, https://www.iucn.org/downloads/arctic_law_policy.pdf, 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxv] "'अकथनीय और बेतुका ' - रूस ने आधिकारिक स्वालबार्ड यात्रा पर नॉर्वे की अतिप्रतिक्रिया को विस्फोट किया", *आरटी*, 20 अप्रैल, 2015, https://www.rt.com/russia/251209-russia-rogozin-svalbard-ministry, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxvi] पावेल डेवयाटिकिन, "रूस की आर्कटिक रणनीति: संघर्ष या सहयोग के उद्देश्य से? (भाग I)", *आर्कटिक संस्थान*, 6 फरवरी, 2018, https://www.thearcticinstitute.org/russias-arctic-strategy-aimed-conflict-cooperation-part-one/, 15 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxvii] माइकल लैम्बर्ट, "रूस की आर्कटिक महत्वाकांक्षाएं आर्थिक परेशानियों से वापस आयोजित की जाती हैं", *अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा के लिए केंद्र, 28 फरवरी, 2018,* http://cimsec.org/russias-arctic-ambitions-held-back-economic-troubles/35590*,* 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxviii] "आर्कटिक में रूसी सैन्य बिल्ड-अप: शक्ति के संतुलन में रणनीतिक बदलाव या केवल बेलिकोज़ बयानबाजी? आर्कटिक ईयरबुक, 2014, पृष्ठ 2. https://arcticyearbook.com/images/yearbook/2014/Scholarly_Papers/22.Padrtova.pdf, 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxix] ----, "रूस और आर्कटिक परिषद: आर्कटिक परिषद-ए बैकग्राउंडर," *आर्कटिक परिषद,* 20 मई, 2015, https://www.artci-council.org/index.php/en/acap-home/acpa-documents-and-reports/33-about-us, 30 जून,2019 को अभिगम्य।

[xxx] ----, "पुतिन ने कहा कि आर्कटिक व्यापार मार्ग स्वेज का प्रतिद्वंद्वी है," *आर्कटिक परिवहन,* 23 सितम्बर, 2011, https://arctictransport.wordpress/com, 30 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxxi] ----, “पुतिन कहते हैं आर्कटिक शिपिंग रूट्स जल्द ही स्वेज नहर प्रतिद्वंद्वी होगा,” येल पर्यावरण *360,* 23 सितम्बर, 2011, https://e360.yale.edu/digest/arctic, 03 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[xxxii] Op.Cit xxviii, BarboraPadrtova, पृष्ठ 02

[xxxiii] साइमन ओसबोर्न, "आर्कटिक के माध्यम से पहले से अगम्य व्यापार मार्ग खोलने के लिए रूसी परमाणु आइसब्रेकर, एक्सप्रेस.क.इन, 14 दिसंबर, 2018, https://www.express.co.uk/news/world/1058925/russian-news-nothern-sea-route-artci-ocean-rostam-nucler-powered-icebreakers, 29 जनवरी, 2019 को अभिगम्य। और 2018 में इसके प्रदर्शन पर सरकारी रिपोर्ट”, *रूसी सरकार,* 17 अप्रैल, 2019, https://wwwgovernment.ru/en/news/36422/, 03 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[xxxiv] रोसाटोम अब औपचारिक रूप से जनवरी 2019 से एनएसआर के रूस के प्रबंधन प्राधिकरण हैं। रूसी आर्कटिक शिपिंग तेजी से वृद्धि की ओर है। 2018 में, लगभग 18 मिलियन टन खाद्य पदार्थों को समुद्री मार्ग पर ले जाया गया था, जो 2017 से लगभग 70 प्रतिशत की वृद्धि थी। क्रेमलिन की प्राथमिकता 2024 तक परिवहन किए जाने वाले 80 मिलियन टन सामान को प्राप्त करना है। रूस के प्रधानमंत्री दिमित्री मेदवेदेव द्वारा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे के बारे में एक अद्यतन में, उन्होंने कहा कि सबेट्टा बंदरगाह का निर्माण पूरा हो गया है। यमल एलएनजी परियोजना अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच गई है। इसके अतिरिक्त, उत्तरी अक्षांशीय रेलवे का निर्माण और क्षेत्रीय रेल नेटवर्क का आधुनिकीकरण चल रहा है।

[xxxv] पूर्वोक्त

[xxxvi] ए शेरबिनिन,ई. डानिलोवा, एसेंटसोवा, एल. बोल्सुनोक्स्कया, और यू बोल्सुनोक्स्कया, "रूसी आर्कटिक: अतीत और भविष्य के मोड़ पर अभिनव संभावनाएं,” *आईओपी सम्मेलन श्रृंखला: पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान,* 2015, पृष्ठ. 05, https://iopscience.iop.org/article/10.1088/1755-1315/27/1/012022/pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxxvii] मार्लीन लॉरेल, "रूस की आर्कटिक रणनीति में बोरिया, आशाओं, प्रचार और रियलपोलिटिक की खोज में," आर्कटिक और उत्तर, पृष्ठ 13-14, https://www.arcticandnorth.ru/upload/medialibrary/a4c/laruelle_russia_s-strategy-in-the-arctic.pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xxxviii] ब्रिटानिका, "मुरमांस्क”, https://www.britannica.com/place/Murmansk-Russia, 12 अप्रैल 2021 को अभिगम्य।

[xxxix] कैथरिन हिल, फाइनेंशियल टाइम्स 2016, "रूस का आर्कटिक जुनून” https://ig.ft.com/russian-arctic/, 20 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।

[xl] ----“ आर्कटिक में रूस के राष्ट्रीय हितों की रक्षा पर रूसी सुरक्षा परिषद की बैठक में भाषण”, *रूस के राष्ट्रपति,* 17 सितम्बर, 2008, http://en.kremlin.ru/events/president/transcripts/48304, 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xli] पूर्वोक्त

[xlii] पूर्वोक्त

[xliii] ----, “तक की अवधि के लिए आर्कटिक में रूसी संघ की राज्य नीति की मूल बातें और आगे के परिप्रेक्ष्य के लिए”, *अनुसंधान कोबे (Rossiyskaya Gazeta के प्रकाशन से अनुवादित)*, 30 मार्च, 2009, http://www.research.kobe-u.ac.jp/gsics-pcrc/sympo/20160728/documents/Keynote/Russian_Arctic_Policy_2009.pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xliv] दस्तावेज़ का पाठ रूस में http://kremlin.ru/acts/news/62947 उपलब्ध है

[xlv] एकाटेरिना क्लिमेन्को, "रूस का नया आर्कटिक नीति दस्तावेज परिवर्तन के बजाय निरंतरता का संकेत देता है।”, https://www.sipri.org/commentary/essay/2020/russias-new-arctic-policy-document-signals-continuity-rather-change, 13 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।

[xlvi] माल्टे हम्पर्ट "रूस उत्तरी बेड़े के महत्व को बढ़ाता है इसे सैन्य जिले की स्थिति में अपग्रेड करता है,”https://www.highnorthnews.com/en/russia-elevates-importance-northern-fleet-upgrading-it-military-district-status, 15 अप्रैल 2021 को अभिगम्य।

[xlvii] ----, “रूस में परमाणु हथियार”, *परमाणु खतरा पहल (एनटीआई)*, अक्टूबर 2018. https://www.nti.org/learn/countries/russia/nuclear/, 15 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xlviii] ----, “रूस ने अमेरिका के साथ तनाव के बीच आर्कटिक सैन्य विस्तार का बचाव किया मास्को टाइम्स, 9 अप्रैल, 2019. https://www.themoscowtimes.com/2019/04/09/russia-defends-arctic-military-expansion-amid-tensions-with-us-2-a65161, 15 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xlix] Op. साइटड स्लीक्स, स्चेरबिनिन, ई डानिलोवा, ए सेंटसोव, एल बोलसुनवसक्या और यू बोलसुनवसक्या, पृष्ठ 4. https://iopscience.iop.org/article/10.1088/1755-1315/27/1/012022/pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[l] पूर्वोक्त

[li] ए सेंट्सोव, यू बोल्सुनोव्स्काया और एल बोल्सुनोवस्काया, "आर्कटिक के भविष्य की प्रभावी योजना”, शिक्षाविद एम.ए. उसोव के सम्मान में XVIII अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी, 21 (2014), पृष्ठ 2, file://home/user13/download/Effective आर्कटिक के भविष्य की योजना.pdf 14 सितम्बर, 2020 को अभिगम्य।

[lii] Op. साइटड स्लीक्स, स्चेरबिनिन, ई डानिलोवा, ए सेंटसोव, एल बोलसुनवसक्या और यू बोलसुनवसक्या, पृष्ठ 4. https://iopscience.iop.org/article/10.1088/1755-1315/27/1/012022/pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[liii] ----, “रूस की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और सैन्य सिद्धांत और यूरोपीय संघ के लिए उनके निहितार्थ,” *यूरोपीय संसद*, 2017, पृष्ठ 15, https://www.europarl.europa,eu/RegData/etudes/IDAN/2017/578016/EXPO_IDA%282017%29578016_EN.pd, 05 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[liv] ----, “केप शिमट, रैंगल द्वीप पर रूस का सैन्य बुनियादी ढांचा 2015 के अंत तक बनाया जाएगा, "रूस रक्षा मंच, 15 मई, 2017, https://www.russiadefence.net/t2746p105-arctic-rus, 07 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lv] ली जिहीसिन, "आर्कटिक सागर बढ़ते सैन्यीकरण," चीन सैन्य ऑनलाइन, 07 दिसंबर, 2018, httos://engchinamilcomen/view/2018-12/07/content_9372164.html, 08 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lvi] TrudePettersen, "रूस ने आर्कटिक शीत युद्ध युग एयर बेस को फिर से खोला”, *बेरेंट ऑब्जर्वर,* 30 अक्टूबर, 2013,

[lvii] टिक्सी में आधार के साथ यह द्वीप रूस को क्षेत्र में ऑफ शोर तेल और गैस संसाधनों की रक्षा करने में मदद करेगा। यह बेस उत्तरी सागर मार्ग के साथ नौकायन करने वाले विदेशी जहाजों पर निगरानी रखने में भी देश का समर्थन करेगा

[lviii] एटल स्टेस्लेसन, "रूस पूर्वी आर्कटिक में एक और सैन्य बेस बनाता है,” *बेरेंट ऑब्जर्वर,* 03 सितम्बर, 2018, https://thebarentobserver.com/en/2018/09/russia-builds-another-military-base-east-arctic, 08 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lix] ---, “आर्कटिक में रूस: एक अलग तरह की सैन्य उपस्थिति, *स्ट्रैटफॉर,* 11 नवंबर, 2015, https://worldview.statfor.com/article/russia-arctic-differnt-kind-military-presence, 08 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lx] ----, “रूसी संघ समुद्री सिद्धांत,” *रूस के राष्ट्रपति* 26 जुलाई, 2015, https://en.kremlin.ru/events/president/news/50060, , 08 जुलाई 2019 को अभिगम्य। 2014 के सैन्य सिद्धांत में आर्कटिक में अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए सशस्त्र बलों के रोजगार का उल्लेख किया गया है।

[lxi] पूर्वोक्त

[lxii] ----, “महाद्वीपीय शेल्फ (सीएलसीएस) की सीमाओं पर आयोग बेसलाइन से 200 समुद्री मील से परे महाद्वीपीय शेल्फ की बाहरी सीमाएं: आयोग को प्रस्तुतियां। रूसी संघ का प्रस्तुतीकरण*," महासागर मामलों के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रभाग और समुद्र का कानून*, पर अद्यतन 30 जून, 2009, https://www.un.org/depts/los/clcs_new/submissions_rus.htm, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxiii] "रूस की आर्कटिक सुरक्षा नीति अभी भी उच्च उत्तर में काफी है?" सिपरी नीति पत्र संख्या 45, फरवरी 2016, पृष्ठ 11-12, https://www.sipri.org/sites/default/files/SIPRIPP45.pdf. AND----, “मेदवेदेव: आर्कटिक संसाधन रूस के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं, "सिएटल टाइम्स, 18 सितम्बर, 2008, https://www.seattimes.com/nation-world/medvedev-arctic-resoruces-are-key-to-russias-future, 21 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxiv] पानी के नीचे लोमोनोसोव रिज रूस के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका लिंक सर्बिया को आर्कटिक सीबेड से जोड़ता है। रूस का दावा है कि लोमोनोसोव रिज सर्बियाई महाद्वीपीय शेल्फ का एक विस्तार है, जबकि डेनमार्क का दावा है कि यह ग्रीनलैंड का हिस्सा है। इसी तरह रूस का दावा है कि मेंडेलीव रिज यूरेशियाई महाद्वीप का हिस्सा है।

[lxv] स्टीफन पोर हाउकसन, "आर्कटिक के लिए एक कानूनी बाध्यकारी शासन", हस्कोलिन अकरूयूरेयरी, 2009, पृष्ठ 22, https://skemman.is/bitstream/1946/2090/1/pretun_fixed.pdf, 21 जून,2019 को अभिगम्य।

[lxvi] पॉल आर्थर बर्कमा, अलेक्जेंडर एन. वायलेग्ज़ानिन और ओरन आर यंग, "(रूसी आर्कटिक कानूनों की, "विज्ञान और कूटनीति केंद्र (स्प्रिंगर) 2019, पृष्ठ xiii, https://russiancouncil.ru/upload/iblock/e91/baseline-of-russian-arctic-laws-preface.pdf, 21 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxvii] ----, "सितंबर में आयोजित होने वाले रणनीतिक अभ्यास Tsenr-2019," टॉस. 04 दिसंबर, 2018, https://tass.com/defence/1034163, 10 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lxviii] एटल स्टैलेसेन, " रूस ने युद्ध खेल शुरू किया Tsentr-2019 लॉन्च किया, आर्कटिक सैनिकबोल्शेविक द्वीप पर आगे बढ़ते हैं," बैरेंट्स ऑब्जर्वर, 16 सितम्बर, 2019, https://thebarentsobserver.com/en/security/2019/09/revanchist-forces-advance-bolshevik-island.%252520Accessed%252520on%november%252520, 15 नवंबर 2019 को अभिगम्य।

[lxix] जेम्स सेडेल, "रूस ने 2019 में बड़े पैमाने पर आर्कटिक युद्ध खेलों की घोषणा की," *नई कॉर्प,* 21 दिसंबर, 2018, https://www.news.com.au/technology/innovation/military/russia-announced-large-scale-arctic-wargames-in-2019/newsstory/148ebccelfb414e812003a76e4f0156d, 10 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[lxx] कनाडा, डेनमार्क, आइसलैंड, नॉर्वे, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका नाटो के सदस्य हैं।

[lxxi] कैमिला टी. एन. सोरेनसेन और एकाटेरिना क्लिमेंको एसआईपीआरआई पॉलिसी पेपर नंबर 46, आर्कटिक संभावनाओं और बाधाओं में उभरते चीनी-रूसी सहयोग, "सिपरी, स्टॉकोम, 2017, पृष्ठ. Vii

[lxxii] हीथर ए कॉनले, "जलवायु परिवर्तन रूस को फिर से आकार देगा," https://www.csis.org/analysis/climate-change-will-reshape-russia, 20 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।

[lxxiii] निक्सन लाइब्रेरी, "राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय ज्ञापन 144, संयुक्त राज्य अमेरिका आर्कटिक नीति और आर्कटिक नीति समूह," https://www.nixonlibrary.gov/site/default/files/virtuallibrary/documents/nsdm/nsdm_144. पृष्ठ. 01, 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxiv] रेगन लाइब्रेरी, "राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय निर्देश संख्या 90: संयुक्त राज्य अमेरिका आर्कटिक नीति," https://www.reganlibrary.gov/site/default/files/archives/reference/scanned-nsdds/nsdd90.pdf, पृष्ठ. 01, 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxv] फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट्स, "राष्ट्रपति के निर्णय निर्देश / एनएससी -26," https://fas.org/irp/offodcs/pdd/pdd-26.pdf, पृष्ठ 01-02, 14 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxvi] नेशनल साइंस फाउंडेशन, "राष्ट्रीय सुरक्षा राष्ट्रपति निर्देश / एनएसपीडी -66 होमलैंड सुरक्षा राष्ट्रपति निर्देश / एचएसपीडी -25," https://www.nsf.gov/geo/opp/opp_advisory/brifing/may2009/nspd66_hspd25.pdf, 14 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxvii] पूर्वोक्त

[lxxviii] (यूएनसीएलओएस) एक अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसे 1982 में अपनाया और हस्ताक्षरित किया गया था। कन्वेंशन समुद्री और समुद्री गतिविधियों के लिए कानूनी ढांचा बन गया है। कन्वेंशन https://www.un.org/Depts/los/convention_agreement/texts/unclos/UNCLOS-TOC.htm, 16 जून, 2019 को अभिगम्य पर उपलब्ध है।

[lxxix] व्हाइट हाउस, "आर्कटिक क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय रणनीति," https://obamawhitehouse.archieves.gov/site/default/files/nat_arctic_strategy.pdf, पृष्ठ.02, , 12 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxx] पूर्वोक्त

[lxxxi] पूर्वोक्त, पृष्ठ.04

[lxxxii] ----, “आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों में अमेरिकी राष्ट्रीय हितों की रक्षा पर ज्ञापन,” https://uaf.edu/caps/resources/policy-documents/us-memorandum-on-safeguarding-natl-interests-in-the-arctic-and-antarctic-regions-2020.pdf, 13 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।

[lxxxiii] आंकड़े अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन से लिए गए हैं, https://www.eia.gov/todayinenergy/details.php?id=4650, 17 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxxiv] संयुक्त राज्य अमेरिका के तटरक्षक बल, "आर्कटिक रणनीति 2013,” https://www.uscg.mil/Portals/0/Strategy/cg_arctic_strategy.pdf, पृष्ठ. 06, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxxv] समझौते का पाठ https://eur-lex.europa.eu/legal-content/EN/TXT/?uri=COM:2018:453:FIN, पर उपलब्ध है 18 जून,2019 को अभिगम्य।

[lxxxvi] अमेरिकी रक्षा विभाग, "आर्कटिक क्षेत्र 2016 में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा हित की रक्षा के लिए रणनीति पर कांग्रेस को रिपोर्ट करें,” https://dod.defese.gov/Portals/1/Documents/pups/2016-Arctic-Strategy-UNCLAS-cleared-for-release.pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[lxxxvii] अमेरिकी रक्षा विभाग, "2019 आर्कटिक रणनीति,” https://media.defense.gov/2019/Jun/06/2002141657/-1/-1/1/2019-DOD-ARCTIC-STRATEGY.PDF, 13 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।, पृष्ठ.01

[lxxxviii] रॉबी ग्रामर, "यहां आर्कटिक में रूस का सैन्य बिल्ड-अप कैसा दिखता है,” https://foreignpolicy.com/2017/01/25/heres-what-russias-military-build-up-in-the-arctic-looks-like-trump-oil-military-high-north-infographics-map/, 29 जनवरी, 2019 को अभिगम्य।

[lxxxix] Op.Cit. lxxxiv, संयुक्त राज्य अमेरिका के तटरक्षक आर्कटिक रणनीति 2013, पृष्ठ. 10

[xc] संयुक्त राज्य अमेरिका के तटरक्षक बल, "तटरक्षक रणनीतिक योजना 2018-2022,” https://www.uscg.mil/Portals/0/seniorleadership/alwaysready/USCG_Strategic%20Plan_LoResReaderSpreads_20181115_vFinal.pdf?ver=2018-11-14-150015-323, पृष्ठ. 04, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xci] यूएस कोस्ट गार्ड, "यूएस कोस्ट गुराद: 2019 आर्कटिक रणनीतिक आउटलुक,” https://www.uscg.mil/Portals/0/Images/arctic/Arctic_Strategy_Book_APR_2019.pdf, 21 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।, पृष्ठ. 08

[xcii] पूर्वोक्त

[xciii] फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट्स, "201C कोस्ट गार्ड ध्रुवीय सुरक्षा कटर (ध्रुवीय चुप्पी तोड़ना) कार्यक्रम, https://fas.org/sgp/crs/weapons/RL34391.pdf, पृष्ठ 30, 19 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xciv] होमलैंड सुरक्षा के अमेरिकी विभाग, "आर्कटिक होमलैंड सुरक्षा 2021 के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण, https://www.dhs.gov/sites/default/files/publications/21_0217_plcy_dhs-arctic-strategy.pdf, 21 सितम्बर 2021 को अभिगम्य।, पृष्ठ. 16

[xcv] अमेरिकी नौसेना रक्षा विभाग, "अमेरिकी नौसेना आर्कटिक रोड मैप 2014-2030,” https://www.navy.mil/docs/USN_arctic_roadmap.pdf, पृष्ठ.17, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xcvi] पूर्वोक्त

[xcvii] पूर्वोक्त, पृष्ठ.18

[xcviii] संयुक्त राज्य अमेरिका के तटरक्षक, "आर्कटिक रणनीति आउटलुक 2019," https://www.usgc.mil/portals/0/Images/arctic/Arctic_Strategic_Outlook_APR_2019_pdf, पृष्ठ.10-11, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[xcix] एर्नी रेगेहर, "उत्तर चेतावनी प्रणाली की जगह: रणनीतिक प्रतियोगिता या आर्कटिक आत्मविश्वास निर्माण? आर्कटिक सुरक्षा ब्रीफिंग पेपर,”

https://www.thesimonsfoundation.ca/sites/default/files/Replaceing%20the%20North%20Warning%20System-Strategic%20competion%20or%20Arctic%20confidence%20building%20-%20%20Arctic%20Security%20Brifing%20paper%2C%20March%201%202018.pdf, 18 जून, 2019 को अभिगम्य।

[c.] Op.Cit. xcviii, संयुक्त राज्य अमेरिका तट रक्षक, आर्कटिक रणनीति आउटलुक 2019, पृष्ठ.10

[ci.] पूर्वोक्त

[cii.] ---, "10 दिसंबर 1982 के सागर के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन: अवलोकन और पूर्ण पाठ, *महासागर मामलों और समुद्र के कानून के लिए प्रभाग*, अंतिम अद्यतन 28 मार्च, 2018, https://www.un.org/depts/los/convention_agreements/convention_overview_convention.htm, , 26 जून, 2019 को अभिगम्य।

[ciii.] चीन की स्थिति में बदलाव आया है। 2009 और 2010 के बीच चीन ने आर्कटिक के विचार को मानव जाति की एक सामान्य विरासत के रूप में बढ़ावा दिया। फिर भी, 2013 के बाद से, यह चीन के 'आर्कटिक के पास' राष्ट्र होने की कथा को बढ़ावा दे रहा है।

[civ.] म्यूनिख सुरक्षा रिपोर्ट 2017, "आर्कटिक: टेम्पर्स राइजिंग?', https:://www.securityconference.de/publikationen/munich-security-report/munich-security-repor-2017/places/the-arctic-tempers-rising/, 26 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cv.] Barents सागर और Beaufort सागरों महत्वपूर्ण मछली पकड़ने के मैदान बन जाएगा। तांग गुओकियांग, "आर्कटिक मुद्दों और चीन की पुलिस, सीआईआईसी, 06 फरवरी, 2013, https://www.ciis.org/cn/gyzz/2013-02/06/content_5727672.htm, 27 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cvi.] "चीन की आर्कटिक गेम प्लान क्या है?", द *अटलांटिक*, 16 मई, 2013, https://www.theatlantic.com/china/archives/2013/05/what-is-chinas-arctic-game-plan/275894/, 27 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cvii.] नॉर्थवेस्ट पैसेज और नॉर्थईस्ट पैसेज चीन को यूरोप की यात्रा के समय को 15,000 मील से 8,000 मील तक कम करने में मदद करेगा।

[cviii.] पोलर सिल्क रोड वन बेल्ट एंड वन रोड इनिशिएटिव का तीसरा विस्तार है।

[cix.] शेरी गुडमैन और मारिसोल मैडॉक्स, "चीन की बढ़ती आर्कटिक उपस्थिति," *विल्सन केंद्र,* 19 नवंबर, 2018, https://www.wilsoncenter.org/article/chinas-growing-arctic-precene, 28 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cx.] ----, "चीन ने आर्कटिक नीति प्रकाशित की, 'ध्रुवीय सिल्क रोड' की दृष्टि पर नजर रखी;", *सिन्हुआ*, 26 जनवरी, 2018, https://www.xinhuanet.com/english/2018-01/26/c_136926357.htm, 28 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cxi.] चीन की आर्कटिक नीति का पूरा पाठ कहाँ उपलब्ध है? https://www.xinhuanet.com/english/2018-01/26/c_136926498_4.htm, 28 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cxii.] दक्षिण चीन सागर में संघर्ष हो रहा है जो तेल और गैस की खोज के साथ-साथ पर्याप्त मछली पकड़ने वाले जलाशयों के कारण बढ़ती रुचि के कारण 2007 में बढ़ गया है।

[cxiii.] ----, "चीन की आर्कटिक नीति," चीन गणराज्य के विदेश मंत्रालय, 26 जनवरी, 2018, https://www.fmprc.gov.cn/mfa_eng/wjdt_665385/wjzcs/tl529332.shtml, 03 नवंबर, 2019 को अभिगम्य।

[cxiv.] रूस ने हमेशा संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थानों का समर्थन किया है, हालांकि, इन संगठनों पर अमेरिका के प्रभुत्व के खिलाफ रहा है। इसी तरह, चीन ने पड़ोसियों के साथ दक्षिण चीन सागर विवाद पर हेग में अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण के फैसले को तोड़ दिया।

[cxv.] Svalbard संधि 1920, आर्कटिक पोर्टल, http://library.arcticportal.org/1909/1/The_Svalbard_Treaty_9ssFy.pdf, 5 दिसंबर 2019 को अभिगम्य।

[cxvi.] "भारत और आर्कटिक, "फोकस में, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, 10 जून 2013, https://mea.gov.in/in-focus-article.htm?21812/India+and+the+Arctic, 7 दिसंबर 2019 को अभिगम्य।

[cxvii] दोनों कंपनियां पहले से ही रूसी सुदूर पूर्व में सखालिन-I तेल और गैस परियोजना में भागीदार हैं।

[cxviii] संजय चतुर्वेदी, "भारत की आर्कटिक सहभागिता: चुनौतियां और अवसर," *एशिया नीति*, 2014, संख्या 18, पृष्ठ. 73-79.

[cxix] आर्कटिक डेटाबेस, "2020 के लिए आर्कटिक के लिए रूसी संघ नीति," https://www.arctis-search.com/tiki-index.php?page=Russia%20federation%20Policy%20for%20the%20Arctic%20to%2020, 28 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cxx] रक्षा विभाग, "कार्यकारी सारांश: परमाणु मुद्रा की समीक्षा 2018, https://media.defence.gov/2018/Feb/02/2001872877/-1/-1/1/EXECUTIVE SUMMARY.PDF, पृष्ठ.01, 29 जून, 2019 को अभिगम्य।

[cxxi] यह समझौता परमाणु और पारंपरिक जमीन लॉन्च बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइल की तैनाती को प्रतिबंधित करता है, जिसमें मध्यवर्ती रेंज 500-5,500 किमी (310-3,410 मील) के रूप में परिभाषित होती है।

[cxxii] यूएस स्ट्रैटेजिक कमांड, "नॉर्ड और यूस्नोर्थकॉम ने यूस्ट्राकॉम का दौरा किया," https://www.stratcom.mil/Media/News/Newa-Arcticle-View/Article/1746080/norad-and-usnorthcom-visits-usstratcom/, 01 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[cxxiii] सर्गेई सयेंको, "आर्कटिक हथियारों की दौड़ के लिए कोई जगह नहीं है," https://inforos.ru/en/?module=news&action=views&id=86688, 01 जुलाई, 2019 को अभिगम्य।

[cxxiv] एंथनी रसेल, "क्रीमिया, जलवायु परिवर्तन और अमेरिका-रूस संबंध: एक आदर्श तूफान," https://www.rand.org/blog/2014/05/criema-cliamte-change-and-us-russia-relations.html, 28 अक्टूबर, 2019 को अभिगम्य।